



DAWAT-E-ISLAMI

રિસાલા નંબર 130

Bimar Aabid (Gujarati)

બીમાર આબિદ

(મગ બીમારિયો કે 78 રૂહાની ઈલાજ)

શેખે તરીકત, અમીરે અહલે મુન્તાક, બાનિયે દો'વતે ઇસ્લામી, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ

મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَشَقِیْنِیْمُ
السَّالِحِیْنِیْمُ

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

किताब पढने की दुआ

अज : शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, जानिये दा'वते ईस्लामी, हजरत अल्लामा

मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्यास अतार कादिरि र-अवी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पडले जैल में दी हुई दुआ पढ
लीजिये إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दुआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तरजमा : ओ अल्लाह एज़्ज़ल्लु ज़ल्ल ! हम पर ईलमो हिकमत के दरवाजे भोल दे और हम पर
अपनी रहमत नाज़िल फ़रमा ! ओ अ-अमत और बुज़ुर्गी वाले । (المستطرف ج ۱ ص ۴۰۱ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आभिर अेक अेक बार दुइद शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

व अकीअ

व मजिदरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.



बीमार आबिद

येह रिसाला (बीमार आबिद)

शैभे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, जानिये दा'वते ईस्लामी हजरत
अल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुहम्मद ईल्यास अतार कादिरि र-अवी ज़ियाह
दَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने उईदू अहान में तहरीर फ़रमाया है.

मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी) ने ईस रिसाले को गुजराती रस्मुल
पत में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-अतुल मदीना से शाअेअ करवाया है.
ईस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाअें तो मजलिसे तराजिम को (अ अरीअअे
मक्तूब, ई-मेईल या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाईये.

राबिता : मजलिसे तराजिम (दा'वते ईस्लामी)

मक-त-अतुल मदीना, सिलेकटेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाजा, अहमदआबाद-1, गुजरात, ईन्डिया

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

બીમાર આબિદ

શૈતાન લાખ સુસ્તી દિલાએ યેહ રિસાલા (48 સફહાત)
મુકમ્મલ પઠ લીજિયે. إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى બીમારી બરદાશત કરને
કા જઝબા દોબાલા હોગા.

દુરૂદ શરીફ કી ફઝીલત

સરકારે મદીના, રાહતે કલ્બો સીના, સાહિબે મુઅત્તર પસીના
صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને બા કરીના હૈ : “એ લોગો ! બેશક બરોઝે
કિયામત ઉસ કી દહ્શતોં ઔર હિસાબ કિતાબ સે જલ્દ નજાત પાને વાલા શખ્સ
વોહ હોગા જિસ ને તુમ મેં સે મુઝ પર દુન્યા કે અન્દર બ કસરત દુરૂદ શરીફ પઠે
હોંગે.”

(الْفُرْدَوْسُ بِمَأْثُورِ الْخُطَابِ ج ٥ ص ٢٧٧ حديث ٨١٧٥)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ عَلَى مُحَمَّدٍ

બીમાર આબિદ

હઝરતે સચ્ચિદુના વહ્બ બિન મુનબ્બેહ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ સે મન્કૂલ
હૈ : દો આબિદ યા'ની ઈબાદત ગુઝાર પચાસ સાલ તક અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કી
ઈબાદત કરતે રહે, પચાસવેં સાલ કે આબિર મેં ઉન મેં સે એક આબિદ
સપ્ત બીમાર હો ગએ, વોહ બારગાહે રબ્બે બારી عَزَّوَجَلَّ મેં આહો ઝારી
કરતે હુએ ઈસ તરહ મુલ્તજી હુએ (યા'ની ઈલ્તિજા કરને લગે) : “એ મેરે
પાક પરવર દગાર عَزَّوَجَلَّ ! મેં ને ઈતને સાલ મુસલ્સલ તેરા હુકમ માના,
તેરી ઈબાદત બજા લાયા ફિર ભી મુઝે બીમારી મેં મુબ્તલા કર દિયા
ગયા, ઈસ મેં ક્યા હિક્મત હૈ ? મેરે મૌલા عَزَّوَجَلَّ ! મેં તો આઝમાઈશ મેં

करमाने मुस्तफ़ी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالسَّلَام : जिस ने मुज पर अक बार दुइटे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रहमते भेजता है. (५)

डाल दिया गया हूँ.” अल्लाह ﷻ ने फिरिशतों को हुकूम फ़रमाया : एन से कडो, “तुम ने हमारी डी एमदाद व अहसान और अता कर्दा तौफ़ीक से हमारी एबादत की सआदत पाई, बाकी रही बीमारी ! तो हम ने तुम को अबरार का रुत्बा देने के लिये बीमार किया है. तुम से पहले के लोग तो बीमारी व मुसीबतों के ज्वाडिश मन्द हुवा करते थे और हम ने तुम्हें बिन मांगे अता फ़रमा दी.”

(عُيُونُ الْحَوَايَاتِ حِصَّة ٢ ص ٣١٢ بتصرف)

बीमारी बहुत बडी ने'मत है

सदरुशशरीअह, अदरुतरिकह उजरते अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَرِيمِ फ़रमाते हैं : बीमारी भी अक बहुत बडी ने'मत है, एस के मनाफ़ेअ बे शुमार हैं, अगर्ये आदमी को अ ज़ाहिर एस से तकलीफ़ पडोयती है मगर डकीकतन राहत व आराम का अक बहुत बडा ज़प्पीरा हाथ आता है. येह ज़ाहिरि बीमारी जिस को आदमी बीमारी समजता है, डकीकत में इडानी बीमारियों का अक बडा ज़बर दस्त एलाज है. डकीकी बीमारी अमराजे इडानिया (म-सलन दुन्या की मडब्बत, दौलत की डिर्स, बुज्ज, दिल की सप्ती वगैरा) हैं, के येह अलबत्ता बहुत फौफ़ की खीज है और एसी को म-रजे मोडलिक (या'नी डलाक करने वाली बीमारी) समजना ख़ाडिये.

(अडारे शरीअत, जि. 1, स. 799)

येह तेरा जिस्म जो बीमार है तश्वीश न कर येह मरज तेरे गुनाहों को मिटा जता है
असल अरबाद कुन अमराज गुनाहों के हैं भाई क्यूँ एस को फ़रामोश किया जता है

(वसाएले अज्शिश (मुरम्मम), स. 432)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

करमाने मुस्तकी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझे पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह बढ भप्त हो गया. (अबिन)

जम्मी होते ही हंस पडीं (छिकायत)

उजरते सय्यिदुना इत्त मौसिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْوَالِي अहलियमे मोह-त-रमा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى عَلَيْهَا अक मर्तबा जोर से गिरीं जिस से नापुन मुबारक टूट गया, लेकिन दर्द से “हाअे हू” करने के बजाअे हंसने लगीं !! किसी ने पूछा : क्या जम्भ में दर्द नहीं हो रहा ? इरमाया : “सब्र के बढले में हाथ आने वाले सवाब की ખुशी में मुझे थोट की तकलीफ़ का ખयाल ही न आ सका.” (الْمَجَالِسَةُ لِلدِّيْنَورِي ج ۳ ص ۱۳۴)

अमीरुल मुअमिनीन उजरते मौलाअे काअेनात, अलिय्युल मुर्तजा शेरे ખुदा كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيم की अ-जमत और मा'रिफ़त का येह हक है के तुम अपनी तकलीफ़ की शिकायत न करो और न अपनी मुसीबत का तजक़िरा करो.¹ (बिला उजरत बीमारी परेशानी का दूसरों पर एजहार बे सब्री है अइसोस ! मा'भूली नजला और जुकाम या दर्द सर भी हो जाअे तो भा'ज लोग ख्वाह म ख्वाह हर अक को कहते फिरते हैं)

दूटे गो सर पे कोहे बला सब्र कर, अै मुबद्लिग ! न तू डगमगा सब्र कर

बब पे हई शिकायत न ला सब्र कर, हां येही सुन्नते शाहे अबरार है

(वसाएले बख़िश (मुरम्मम), स. 473)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मुसीबत छुपाने की इमीलत

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बीमारी और परेशानी पर शिक्वा करने के बजाअे सब्र की आदत बनानी याहिये के शिकायत करने से मुसीबत

مدینہ ۱۰۵۶ لے منهاج القاصدين ومفيد الصادقين لابن الجوزی ص ۱۰۵۶

ફરમાને મુસ્તકા : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुइदें पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (مُعْجَزَاتِهِ)

दूर नहीं छो जाती बल्के बे सध्री करने से सध्र का अज्ज जाओअ छो जाता है. बिवा ज़रत बीमारी व मुसीबत का ईजहार करना भी अशुकी बात नहीं. युनान्ये हज़रते सय्यिदुना ईब्ने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا फरमाते हैं के रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाई फरमाया : “जिस के माल या ज्ञान में मुसीबत आई फिर उस ने उसे छुपाया और लोगों से उस की शिकायत न की तो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ पर हक है के उस की मग्फ़िरत फरमा दे.” (مُعْجَمِ أَوْسَطِ ج ١ ص ٢١٤ حَدِيثِ ٧٣٧)

दाढ में दर्द के सभज में सो न सका ! (छिकायत)

हुज्जतुल ईस्लाम हज़रते सय्यिदुना ईमाम मुहम्मद गज़ाली नकल करते हैं : हज़रते सय्यिदुना अह्नफ़ बिन कैस रَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ फरमाते हैं : अेक बार मेरी दाढ में शदीद दर्द हुवा जिस के सभज में सारी रात सो न सका. मैं ने दूसरे दिन अपने यथाज्ञान की भिदमत में शिकायत की, के “मैं दाढ के दर्द की वजह से सारी रात सो न सका.” ईस बात को मैं ने तीन बार दोहराया. ईस पर उन्हों ने फरमाया : तुम ने अेक ही रात में होने वाले अपने दर्द की ईतनी ज़ियादा शिकायत कर डाली ! डालां के मेरी आंभ को जाओअ हुअे तीस भरस छो युके हैं, (अगर्ये देभने वालों को मा'लूम हो मगर अपनी ज़बान से) मैं ने कभी किसी से ईस की शिकायत नहीं की ! (أَحْيَاءُ الْعُلَمَاءِ ج ٤ ص ١٦٤)

अद्लाहु रब्बुल ईज़्जत एَزَّوَجَلَّ की उन पर रडमत हो और उन के सडके डमारी बे डिसाभ मग्फ़िरत हो.

أَمِينِ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

बीमार के लिये तोहफ़ा

सरवरे आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का फरमाने

इरमाने मुस्तफ़ा علی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जिस के पास मेरा ठिक हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (مبارزق)

मुअज़्ज़म है : जब कोई बन्दा बीमार हो जाता है तो अल्लाह ﷻ उस की तरफ़ दो किरिशते भेजता है के जा कर देखो मेरा बन्दा क्या कइता है. बीमार अगर अल्लाह तआला की उम्हो सना करता (म-सलन للهِ الْحَمْدُ कइता) है तो किरिशते अल्लाह ﷻ की बारगाह में जा कर उस का कौल अर्ज करते हैं और अल्लाह ﷻ भूष जानता है. एशदि एलाही होता है : “अगर मैं ने इस बन्दे को इस बीमारी में मौत दे दी तो इसे जन्नत में दाखिल करूंगा और अगर सिद्धत अता की तो इसे पइले से भी बेहतर गोशत और पून दूंगा और इस के गुनाह को मुआफ़ कर दूंगा.” (موطأ امام مالك ج ۲ ص ۴۲۹ حدیث ۱۷۹۸)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

“इल्ले रभ” के पांच हुर्रुफ़ की निरुबत से बीमारी के

इत्तायल पर 5 इरामीने मुस्तफ़ा صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

① बेशक अल्लाह ﷻ अपने बन्दे को बीमारी में मुब्तला इरमाता रहता है यइं तक के उस का हर गुनाह मिटा देता है. (الْمُسْتَدْرَك ج ۱ ص ۶۶۹ حدیث ۱۳۲۶)

② जब मोमिन बीमार होता है तो अल्लाह ﷻ उसे गुनाहों से औसा पाक कर देता है जैसे लट्टी लोहे के जंग को साफ़ कर देती है.

(الْتَرْغِيب وَالتَّرْهِيْب ج ۴ ص ۱۴۶ حدیث ۴۲)

③ जब अल्लाह ﷻ किसी मुसल्मान को जिस्मानी तकलीफ़ में मुब्तला करता है तो किरिशते से इरमाता है : “जो नेक अमल येह तन्दुरुस्ती की डालत में किया करता था इस के लिये वोही लिखो.” फिर अगर अल्लाह ﷻ उसे शिफ़ा अता इरमाता है तो उस के (गुनाह) धुल जाते हैं और वोह पाक हो जाता है और अगर उस की मौत आ जाये तो उस की मग्दिरत इरमा दी जाती है

करमाने मुस्तकी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पड़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शकाअत कइंगा. (कोरान)

और उस पर रहुम किया जाता है. (मुसुनो امام احمد بن حنبل ج ६ ص २९७ حديث १२००)

﴿4﴾ मरीज के गुनाह इस तरह उठते हैं जैसे दरपत के पत्ते उठते हैं.

(الترغيب والترهيب ج ६ ص १६८ حديث ०६)

﴿5﴾ अद्लाह तआला इरमाता है : जब अपने बन्दे की आंभे ले लूं फिर वो ल सभ्र करे, तो आंभों के बदले उसे जन्त दूंगा. (بخاری ج ६ ص १०३ حديث ०६)

बिगैर बीमार हुओ वइत

सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के उमाने में अेक शप्स का इन्तिकाल हुवा तो किसी ने कडा : “येह कितना फुश नसीब है के बीमार हुओ बिगैर ही इत लो गया.” तो रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने इरमाया : “तुम पर अइसोस है ! क्या तुम्हें नही मा'लूम, के अगर अद्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे किसी बीमारी में मुतला इरमाता तो उस के गुनाह मिटा देता.”

(موطأ امام مالك ج २ ص ६३० حديث १८०१)

अेक रात के बुजार का सवाब

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! बुजार में जिस्मानी तकलीफ उठर है मगर उप्परी फाअदे बे शुमार हैं, लिहाजा धबरा कर शिक्वा व शिकायत करने के बजाअे सभ्र कर के अज कमाना याहिये. उठरते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है : जो अेक रात बुजार में मुतला हो और उस पर सभ्र करे और अद्लाह عَزَّوَجَلَّ से राजी रहे तो अपने गुनाहों से अैसे निकल जाअे जैसे उस दिन था जब उस की मां ने उसे जना था.

(شُعَبُ الْإِيمَان ج ७ ص १६७ حديث १८६८)

बुजार महशर की आग से बयाअेगा

हुजूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अेक मरीज की

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરુદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમહારે લિયે તહારત હૈ.
(ابن ماجه)

ઈયાદત ફરમાઈ તો ફરમાયા : તુઝે બિશારત હો, કે અલ્લાહ તઆલા ફરમાતા હૈ : બુખાર મેરી આગ હૈ ઈસ લિયે મૈં ઈસે અપને મોમિન બન્દે પર દુન્યા મેં મુસલ્લત કરતા હૂં તાકે કિયામત કે દિન ઈસ કી આગ કા હિસ્સા (યા'ની બદલા) હો જાએ. (૩૬૪૦ હદિથ ૧૦૦૬૮ માજે)

બુખાર કો બુરા ન કહો

સરકારે મદીના, કરારે કલબો સીના صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ હઝરતે સચ્ચિ-દતુના ઉમ્મે સાઈબ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا કે પાસ તશરીફ લે ગએ. ફરમાયા : તુમ્હેં ક્યા હો ગયા હૈ જો કાંપ રહી હો ? અર્ઝ કી : “બુખાર આ ગયા હૈ, અલ્લાહ غَرَّوَجَلَّ ઈસ મેં બ-ર-કત ન કરે.” ઈસ પર આપ صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈર્શાદ ફરમાયા : “બુખાર કો બુરા ન કહો, કે યેહ તો આદમી કી ખતાઓ કો ઈસ તરહ દૂર કરતા હૈ જૈસે ભટ્ટી લોહે કે મૈલ કો.” (૨૦૧૦ હદિથ ૧૩૧૨ મુસ્લમ)

મુફ્સિરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફ્તી અહમદ યાર ખાન رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ઈસ હદીસે પાક કે તહ્ત ફરમાતે હૈં : બીમારિયાં એક યા દો ઉઝૂવ કો હોતી હૈં મગર બુખાર સર સે પાઉં તક હર રગ મેં અસર કરતા હૈ, લિહાઝા યેહ સારે જિસ્મ કી ખતાઓં ઓર ગુનાહોં કો મુઆફ કરાએગા. (મિરઆતુલ મનાજીહ, જિ. 2, સ. 413)

યેહ તેરા જિસ્મ જો બીમાર હૈ તશ્વીશ ન કર

યેહ મરઝ તેરે ગુનાહોં કો મિટા જતા હૈ

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

સરકાર કો દો મર્દોં કે બરાબર બુખાર આતા થા

હઝરતે સચ્ચિદુના અબ્દુલ્લાહ ઈબને મસ્ઉદ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હૈં કે મૈં બારગાહે રિસાલત મેં હાઝિર હુવા ઓર જબ મૈં ને

करमाने मुस्तकी صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस ने मुज पर दस भरतबा दुरुदे पाक पढा अल्लाह उरस पर सो रलभते नाजिल करमाता है. (जिब्रान)

उन की अपनी आभिरत दाव पर लग जाती है. मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ किताब, “कुङ्किया कलिमात के बारे में सुवाल जवाब” सफ़हा 179 पर है : अगर कीसी ने बीमारी, बे रोजगारी, गुरबत या किसी मुसीबत की वजह से अल्लाह عَزَّوَجَلَّ पर अतिराज करते हुअे कहा : “अै मेरे रब ! तू मुज पर क्यूं गुल्म करता है ? हावां के मैं ने तो कोई गुनाह किया ही नहीं.” तो वोह काङ्कुर है.

जहां पर शिकवअे रन्जे अलम लाया नहीं करते
नबी के नाम लेवा गम से धबराया नहीं करते
صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْبُ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

सवाब के शौक में मांग कर बुभार लिया (हिकायत)

सहाबअे किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان का सवाब कमाने का जजबा सद करोड भरलबा ! के सवाब कमाने के शौक में दुआ मांग कर बुभार हासिल कर लिया ! युनान्चे हजरते सय्यिदुना अबू सईद जुदरी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के अेक मुसल्मान ने अर्क की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! हम जिन् बीमारियों में मुप्तला होते हैं हमारे लिये उन में क्या है ? ईशाद इरमाया : (येह बीमारियां गुनाहों के) कङ्कुरे हैं. हजरते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अर्क की : या रसूलल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! अगर्चे बीमारी कम ही हो ? इरमाया : “अगर्चे कांटा युभे या कोई और तकलीफ़ पड़ोये.” तो हजरते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ने अपने लिये येह दुआ की (या अल्लाह) : “मरते दम तक बुभार मुज से जुदा न हो और येह बुभार मुजे हज, उम्रह, अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की राह में जिहाद और इर्क नमाज बा जमाअत अदा करने से न रोके.” इर उन

करमाने मुसकफ़! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक् डो और वोड मुज़ पर दुवूद शरीक न पढे तो वोड लोगो में से कन्जूस तरीन शप्स है. (ज़िबेय्य)

के विसाल तक जिस ने भी उन्हें छुवा बुभार की तपिश मडसूस की. (मुसनुआम अहमद बिन हनबल ज ६ व ८ व ९ व १० व ११ व १२ व १३ व १४ व १५ व १६ व १७ व १८ व १९ व २० व २१ व २२ व २३ व २४ व २५ व २६ व २७ व २८ व २९ व ३० व ३१ व ३२ व ३३ व ३४ व ३५ व ३६ व ३७ व ३८ व ३९ व ४० व ४१ व ४२ व ४३ व ४४ व ४५ व ४६ व ४७ व ४८ व ४९ व ५० व ५१ व ५२ व ५३ व ५४ व ५५ व ५६ व ५७ व ५८ व ५९ व ६० व ६१ व ६२ व ६३ व ६४ व ६५ व ६६ व ६७ व ६८ व ६९ व ७० व ७१ व ७२ व ७३ व ७४ व ७५ व ७६ व ७७ व ७८ व ७९ व ८० व ८१ व ८२ व ८३ व ८४ व ८५ व ८६ व ८७ व ८८ व ८९ व ९० व ९१ व ९२ व ९३ व ९४ व ९५ व ९६ व ९७ व ९८ व ९९ व १००) अल्लाहु रब्बुल ईज़त ईज़्जल की उन पर रडमत डो और उन के सडके डमारी डे डिसाड मड्फ़रत डो.

أَمِينٍ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

यकीनन मुसल्मान के लिये बीमारियों और परेशानियों में डोनो जडानों की ललाईयां हैं, बुभार डो या डोई सी बीमारी या मुसीबत उस से गुनाड मुआड डोते और जन्त डो सामान डोता है.

बुभार तेरे लिये है गुनड डो कडडारा^१

करेगा सड्र तो जन्त डो डोगा नज़्जारा

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

राहे भुडा में सर दर्द पर सड्र की डगीलत

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने डरमाया : “जो अल्लाड ईज़्जल की राड में सर दर्द में मुबतला डो ड़िर उस पर सड्र करे तो उस के पिडले गुनाड मुआड कर डिये ज़अंगे.”

(मुसन्दु डरज ६ व ७ व ८ व ९ व १० व ११ व १२ व १३ व १४ व १५ व १६ व १७ व १८ व १९ व २० व २१ व २२ व २३ व २४ व २५ व २६ व २७ व २८ व २९ व ३० व ३१ व ३२ व ३३ व ३४ व ३५ व ३६ व ३७ व ३८ व ३९ व ४० व ४१ व ४२ व ४३ व ४४ व ४५ व ४६ व ४७ व ४८ व ४९ व ५० व ५१ व ५२ व ५३ व ५४ व ५५ व ५६ व ५७ व ५८ व ५९ व ६० व ६१ व ६२ व ६३ व ६४ व ६५ व ६६ व ६७ व ६८ व ६९ व ७० व ७१ व ७२ व ७३ व ७४ व ७५ व ७६ व ७७ व ७८ व ७९ व ८० व ८१ व ८२ व ८३ व ८४ व ८५ व ८६ व ८७ व ८८ व ८९ व ९० व ९१ व ९२ व ९३ व ९४ व ९५ व ९६ व ९७ व ९८ व ९९ व १००)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

त-ल-डअे डल्ले डीन और म-डनी डडिलों डे

मुसाडरीन डे लिये डुश डडरी

الله ! राडे भुडा में नडकलने वलों की ली डया शान है ! डस डडरीसे डक डे तडूत मुजडिडीन डे डलावा त-ल-डअे डल्ले डीन, डज व डडरड डे लिये डर से नडकलने वाले और सुन्नतों की तरडडधत डे

1 : “गुनाड डो कडडारा” या’नी गुनाड की मुआड की डरीआ.

इरमाने मुस्तफ़ी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالسَّلَام : उस शप्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुवदे पाक न पड़े. (6)

म-दनी काङ्किलों में हुसूले दीन की गरज से सङ्कर करने वाले आशिकाने रसूल भी शामिल हैं यूँके येह सभ राहे भुदा में डोते हैं लिहाजा एन में से भी किसी को सर का दई हुवा तो إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ उस के पिछले गुनाह (सगीरा) मुआफ़ कर दिये जाअेंगे.

सर दई के शुक्राने में 400 रकअत नङ्कल (हिकायत)

म-ङ्कल है के डउरते सय्यिदुना इत्ह मौसिली عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْوَالِي को दई सर हुवा तो भुश हो कर एशाद इरमाया : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने मुजे वोह मरज एनायत इरमाया जो अम्बियाअे किराम عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को दरपेश होता था लिहाजा अब एस का शुक्राना येह है के मैं 400 रकअत नङ्कल पढूं. (152 रकमत बरी हिकायत, स. 171)

बुभार और दई सर, मुभारक अमराज हैं

दा'वते इस्लामी के एशाअती एदारे मक-त-भतुल मदीना की मत्भूआ 561 सङ्कलत पर मुशतमिल किताब, "मङ्कूआते आ'ला डउरत" सङ्कल 118 पर है : (आ'ला डउरत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं :) दई सर और बुभार वोह मुभारक अमराज हैं जो अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को डोते थे, अक वलियुल्लाह رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ के दई सर हुवा, आप ने एस शुक्रिये में तमाम रात नवाङ्किल में गुजार दी, के रब्बुल एज्जत तभा-र-क व तआला ने मुजे वोह मरज दिया जो अम्बिया عَلَيْهِمُ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام को डोता था. अल्लाहु अकबर ! यहां (अवाम की) येह डालत, के अगर बराअे नाम दई मा'लूम हुवा तो येह भयाल डोता है के जल्ल नमाज पढ लें. इर इरमाया : हर अक मरज या तकलीफ़ जिस्म के जिस मौजेअ (या'नी जगह) पर डोती है वोह जियादा कङ्कारा उसी मौकअ (या'नी मकाम)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरुदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क्रमांक)

કા હૈ કે જિસ કા તઅલ્લુક ખાસ ઈસ સે હૈ લેકિન બુખાર વોહ મરઝ હૈ કે તમામ જિસ્મ મેં સરાયત કર જાતા હૈ જિસ સે બિ ઈઝનિહી તઆલા (યા'ની અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ કે હુકમ સે) (બુખાર) તમામ રગ રગ કે ગુનાહ નિકાલ લેતા હૈ. (મલ્કૂઝાતે આ'લા હઝરત, સ. 118)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

જન્નતી ખાતૂન (હિકાયત)

હઝરતે સચ્ચિદુના અતા બિન અબૂ રબાહ રَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હૈં કે હઝરતે સચ્ચિદુના ઈબને અબ્બાસ رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا ને મુઝ સે ફરમાયા : કયા મૈં તુમ્હેં એક જન્નતી ઔરત ન દિખાઊં ? મૈં ને અઝ્ કી : ઝરૂર દિખાઈયે. ફરમાયા : યેહ હબશી ઔરત, ઈસ ને નબિય્યે કરીમ, રઊકુરુદીમ عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ કી ખિદમતે બા બ-ર-કત મેં હાઝિર હો કર અઝ્ કી : યા રસૂલલ્લાહ ﷺ ! મુઝે મિર્ગા¹ કા મરઝ હૈ જિસ કી વજહ સે મૈં ગિર જાતી હૂં ઔર મેરા પર્દા ખુલ જાતા હૈ લિહાઝા અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ સે મેરે લિયે દુઆ કીજિયે. ફરમાયા : “અગર તુમ ચાહો તો સબ્ર કરો ઔર તુમ્હારે લિયે જન્નત હૈ ઔર અગર ચાહો તો મૈં અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ સે દુઆ કરું, કે વોહ તુમ્હેં આફિયત ઈનાયત ફરમા દે.” અઝ્ કી : મૈં સબ્ર કરુંગી. ફિર અઝ્ કી : (જબ મિર્ગા કા દૌરા પડતા હૈ) મેરા પર્દા ખુલ જાતા હૈ, અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ સે દુઆ કીજિયે કે મેરા પર્દા ન ખુલા કરે. ફિર આપ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ઈસ કે લિયે દુઆ ફરમાઈ.

(بخاری ج ٤ ص ٦٠٢ حدیث ٥٦٠٢)

¹ : એક બીમારી જિસ સે આ'બા મેં ઝટકે લગતે હૈં.

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुज पर दुइद शरीक़ पढो अल्लाह عَلَّوْم पर रउमत भेजेगा. (अनसरी)

दवा भी सुन्नत है और दुआ भी

मुफ़्फ़िसरे शहीर उकीमुल उम्मत उजरते मुफ़्फ़ती अहमद यार पान عَلَّوْمِ الرَّحْمٰنِ 2 सफ़्हा 427 पर इरमाते हैं : उस मुबारक औरत का नाम सुअैरा या सुकैरा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا है बीबी अदीजा (لمعات ومرقات) की कंधी योटी की पिदमत अन्जाम देती थीं رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا (मिर्गी में गिर जाती हूँ और मेरा पदार्थ फुल जाता है) के जिम्न में मुफ़्फ़ती साहिब इरमाते हैं : या'नी गिर कर मुझे तन बदन का डोश नहीं रहता, दुपट्टा वगैरा उतर जाता है, थोड़ करती हूँ के कभी बेडोशी में सित्र न फुल जाये. आगे यल कर सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की तरफ़ से उस सहाबिया को “शिफ़ा या सफ़्र” का इप्तिवार देने के तअल्लुक से मुफ़्फ़ती साहिब इरमाते हैं : इस में इशा-रतन मा'लूम हुवा के कभी बीमारी की दवा और मसाइब में दुआ न करना सवाब और सफ़्र में शामिल है इस का नाम फुदकुशी नहीं, फुसूसन जब पता लग जाये के येह मुसीबत रब की तरफ़ से इम्तिडान है इसी लिये (उजरते सय्यिदुना) इब्राहीम عَلَيْهِ السَّلَام ने नमइद की आग में जाते वक्त और उजरते (सय्यिदुना इमाम) हुसैन رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने मैदाने करबला में दइधय्या (या'नी आजमाइश दूर होने) की दुआ न की, वरना आम डालात में दवा भी सुन्नत है और दुआ भी. (मिरआतुल मनाज्जिद)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْبِ ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّدٍ

मिर्गी का इहानी घलाफ़

सू-रतुशशम्स को पढ कर मिर्गी वाले के कान में झूंक मारना बहुत मुफ़्फ़िद है. (जन्ती जेवर, स.602)

﴿۱﴾ **इरमाने मुस्तफ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज़ पर कसरत से दुर्रदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुर्रदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज़िहरत है. (अ. १५)

नस यढ जाने की इज़ीलत

उम्मुल मुअमिनीन उज़रते सय्यि-दतुना आ'शशा सिदीका **﴿۱﴾** इरमाती हैं के मैं ने नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर **﴿۱﴾** को इरमाते सुना : जब मोमिन की नस यढ जाती है तो **﴿۱﴾** उस का ओक गुनाह मिटा देता है, उस के लिये ओक नेकी लिखता है और उस का ओक द-रज़ा बुलन्द इरमाता है. (२६१० हदीथ ६४ व २८ ज २)

पेट की बीमारी में मरने की इज़ीलत

सरकारे आली वकार, मदीने के ताजदार **﴿۱﴾** का इरमाने राहत निशान है : **﴿۱﴾** या'नी जिसे उस के पेट (की बीमारी) ने मारा उसे अज़ाबे क़ब्र न छोगा.

(त्रुमिदी ज २ व ३३६ हदीथ १०१६)

मुफ़स्सिरे शहीर उकीमुल उम्मत उज़रते मुफ़ती अहमद यार **﴿۱﴾** आन **﴿۱﴾** से मरने वाला अज़ाबे क़ब्र से मडफ़ूज़ है क्यूंके उसे दुन्या में **﴿۱﴾** वजह से बहुत तकलीफ़ पड़ोय युकी, येह तकलीफ़े क़ब्र का दफ़'य्या (या'नी दूर करने वाली) बन ग'ई. (मिरआत, जि. 2, स. 425)

“या हुसैन” के छ हुइइ की निरुबत से 6 तरह की बीमारियों में मरने वाले शहीदों की निशान देही जा'अ अमराअ में मरने वाला शहीद है

﴿1﴾ **“पेट की बीमारी में मरने वाला.”** (इस के आशिये में सदरुशरीअह **﴿۱﴾** इरमाते हैं : इस से मुराद इस्तिस्का (या'नी औसी बीमारी जिस में पेट बढ जाता है और प्यास बहुत लगती है) या **“दस्त (MOTION) आना”**

फरमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर अक दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह उंस के लिये अक कीरात अज्ज लिखता है और कीरात उहुद पहाड जितना है. (महारज)

दोनों कौल हैं और येड लइज दोनों को शामिल हो सकता है लिहाजा उस के इज़ल से उम्मीद है के दोनों को शहादत का अज्ज मिले) ﴿2﴾ ज़तुल जम्ब (या'नी पडलू या पस्ली के दई) में मरने वाला ﴿3﴾ सिल (के इस में इइडों में जम्ब हो ज़ते और मुंड से पून आने लगता है इस) में मरने वाला ﴿4﴾ बुभार में मरने वाला ﴿5﴾ मिर्गी में मरने वाला ﴿6﴾ जो मरज में 40 बार कहे और उसी मरज में मर जाओ (वोड शहीद है) और अख्ण हो गया तो उस की मग़िरत हो जाओगी. (तइसील के लिये देभिये : बहारे शरीअत, जि. 1, स. 857 ता 863 मक-त-अतुल मदीना)

मरीज की घयादत का सवाब

उजरते सय्यिदुना अबू अक सिदीक رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है के हुजुरे पाक, साहिबे लौलाक, सय्याडे अइलाक صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : मूसा (عَلَيْهِ السَّلَام) ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से अर्ज की : मरीज की ईयादत करने वाले को क्या अज्ज मिलेगा ? तो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने ईशाद इरमाया : “उस के लिये दो इरिश्ते मुकरर किये जाओगे जो कब्र में हर रोज उस की ईयादत करेंगे उता के कियामत आ जाओ.” (अफ़रदूस بمأثور الأخطاب ج 3 ص 193 حديث 1036)

बीमार को दुआ के लिये कहे

रसूले अकरम, नूरे मुजरसम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने अ-उमत निशान है : जब तुम किसी बीमार के पास जाओ तो उसे अपने लिये दुआ के लिये कहो, के उस की दुआ इरिश्तों की दुआ की तरह है.

(ابن ماجه 2 ص 191 حديث 1441)

फरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने किताब में मुज पर दुइदु पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरिश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (ग्रान)

ध्यादत करते वक्त की अेक सुन्नत

हुजूर ताजदारे रिसालत صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ अेक आ'राबी की ध्यादत को तशरीफ़ ले गअे और आदते करीमा येह थी के जब किसी मरीज की ध्यादत को तशरीफ़ ले जाते तो येह फरमाते :

- لَا بَأْسَ طَهُورًا شَاءَ اللهُ - (या'नी : कोई हरज की बात नहीं अद्लाह तआला

ने याहा तो येह मरज (गुनाहों से) पाक करने वाला है.) उस आ'राबी से ली

येही फरमाया : لَا بَأْسَ طَهُورًا شَاءَ اللهُ - (بخاری ج ۲ ص ۵۰۰ حدیث ۳۶۱۶)

ध्यादत में सात बार पढने की दुआ

उजरते सय्यिदुना धुने अब्बास رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا से रिवायत है के नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने फरमाया :

जिस ने किसी अैसे मरीज की ध्यादत की जिस की मौत का वक्त करीब न आया

हो और सात मर्तबा येह अद्लाज कहे तो अद्लाह عَزَّوَجَلَّ उसे उस मरज से

शिक्षा अता फरमाअेगा : يَا نَبِيَّ اللهِ الْعَظِيمِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ أَنْ يَشْفِيكَ :

में अ-जमत वाले, अर्शे अजीम के मालिक अद्लाह عَزَّوَجَلَّ से तेरे लिये शिक्षा का

सुवाल करता हूं.

(ابوداؤد ج ۳ ص ۲۰۱ حدیث ۳۱۰۶)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

“यल मदीना” के सात हुइइ की निरभत से

ध्यादत के 7 म-दनी फूल

✽ मरीज की ध्यादत करना सुन्नत है ✽ अगर मा'लूम है के

ध्यादत को जाअेगा तो उस बीमार पर गिरां (या'नी ना गवार) गुजरेगा

अैसी हालत में ध्यादत न करे ✽ ध्यादत को जाअे और मरज की सप्ती

देषे तो मरीज के सामने येह ज़ाहिर न करे के तुम्हारी हालत खराब है

﴿مُتَّعْتُمْ فِيهَا أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُبْعَثُونَ فِيهَا مِنْكُمْ رَجُلٌ يَكْفُرُ بِاللَّهِ وَرَجُلٌ يُؤْمِنُ بِهِ﴾ : जिस ने मुज पर ओक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह उंस पर दस रलमतें भेजता है. (स्म)

और न सर छिलाओ जिस से डालत का पराब होना समजा जाता है
 ❁ उस के सामने औसी बातें करनी याछिअें जो उस के दिल को भली
 मा'लूम हों ❁ उस की मिजाज पुर्सी करे ❁ उस के सर पर हाथ न रभे
 मगर जब के वोड खुद ँस की प्वाछिश करे ❁ फ़ासिक की ँयादत भी
 जाँछ है क्यूंके ँयादत लुकूके ँस्लाम से है और फ़ासिक भी मुस्लिम है.

(बहारे शरीअत, जि.3, डिस्सा : 16, स. 505 मुलम्भसन)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

बीमारी और मूट

भीठे भीठे ँस्लामी भाँयो ! सढ करोड अफ़सोस ! अडा नाजुक
 दौर है, “मूट” भोलने जैसे डराम और जडन्नम में ले जाने वाले काम
 से अयने का जेडून बहुत कम रह गया है, न भौंके खुदा है न शर्म
 मुस्तफ़ा, न अजाबे कब्र का धउका है न दोज्भ का षटका ! डर तरफ़
 गोया ! मूट ! मूट ! और अस मूट का राज है ! यकीन मानिये ! बीमार
 हो या तीमार दार, मरीज हो या मिजाज पुर्सी करने वाला रिशतेदार,
 दोस्त दार या महल्ले दार जिसे देओ ! बे धउक मूट भोलता दिभाँ दे
 रहा है. यूंके येह रिसाला बीमारी के मु-तअल्लिक है लिहाजा उम्मत की
 भैर प्वाही के लिये “बीमारी” के यन्द जुदा जुदा उन्वानात के तडूत
 भोले जाने वाले मूट की कुछ मिसालें पेश की जाती हैं :

मा'मूली बीमारी को सप्त बीमारी

कहने के मु-तअल्लिक मूट की 6 मिसालें

जिस किस्म के मुभा-लगे का आदतन रवाज है लोग उसे
 मुभा-लगे ही पर मडूमूल (या'नी गुमान) करते हैं ँस के लकीकी मा'ना

करमाने मुस्तफ़ی صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : जो शप्स मुज पर दुइटे पाक पढना भूल गया वोह जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

मुराद नहीं लेते वोह जूट में दाबिल नहीं, म-सलन येह कहा के तुम्हारे पास हज़ार मर्तबा आया या हज़ार मर्तबा मैं ने तुम से येह कहा. यहां हज़ार का अदद मुराद नहीं बल्के कई मर्तबा आना और कहना मुराद है, येह लइज जैसे मौकअ पर नहीं बोला जायेगा के अेक ही मर्तबा आया हो या अेक ही मर्तबा कहा हो और अगर अेक मर्तबा आया और येह कह दिया के हज़ार मर्तबा आया तो जूटा है. (رَدُّ الْمَحْتَرِ ٩٤ ص ٧٠٠)

﴿1﴾ भा'ज अवकात बीमारी का तजक़िरा करने में अेसा मुबा-लगा किया जाता है के उई व रवाज में लोग उस हद की बीमारी को बयान करने के लिये मुबा-लगे के अैसे अल्फ़ाज इस्ति'माल नहीं करते, म-सलन : किसी को मा'मूली सी बीमारी हो उस के बारे में कहना : "उस की तबीअत बहुत सप्त नासाज है" येह जूट है ﴿2﴾ इजतिमाअ वगैरा में हकीकत में तो किसी और वजह से शिकत न की और इत्तिफ़ाक से कोई मा'मूली सी बीमारी भी थी मगर गैर हाज़िरी का सबब बीमारी न होने के बा वुजूह कहना : "मैं सप्त बीमार था इस लिये न आ सका." इस जुम्ले में गुनाह तरे दो जूट हैं ! (الف) मा'मूली सी बीमारी को "सप्त बीमारी" कहा (ب) बीमारी को गैर हाज़िरी का सबब करार दिया हावां के सबब कुछ और था ﴿3﴾ इसी तरह मा'मूली बुभार हो और कहना : "मुझे इतना तेज बुभार था के सारी रात सो नहीं सका" ﴿4﴾ काम के लिये बोलें तो मा'मूली थकावट होने के बा वुजूह जान छुडाने के लिये कहना : "मैं बहुत थका हुआ हूं किसी और से काम का कह दें" हां सिई इतना कहा : "थका हुआ हूं" तो जूट नहीं. या ﴿5﴾ मा'मूली सा दई हो तब भी बोलना : मेरी टांगों में शहीद दई है

﴿رَبِّمَانِهِ مُسْتَفِئًا صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइते पाक न पढा तहकीक वोह भद भप्त हो गया. (उरुन)

﴿6﴾ यूँही कोर्ट क्यहरी में पेशी वगैरा से बयने के लिये मा'मूली बीमारी को बडा बना कर पेश करना म-सलन कडना : एन के दिल की शिरयान (VEIN) बन्द है, दिल का दौरा पड सकता है वगैरा.

दुजों के बा वुधूद नेकियों भरे जवाबात की मिसालें

मिजाज पुर्सी करने में अक्सर रस्मी सुवालात की तकरार होती है म-सलन : क्या डाल है ? भैरियत है ? आइय्यत है ? कैसे हैं आप ? सिद्धत कैसी है ? और सुनाओ तबीअत अस्थी है ? ठीकठाक हैं ना ? कोई परेशानी तो नहीं ? वगैरा वगैरा. तजरिबा येही है के उमूमन साईल (या'नी पूछने वाला) सिर्फ़ भोलने की भातिर भोल रहा होता है, उकीकत में मुभातब (या'नी जिस की मिजाज पुर्सी कर रहा है उस) की तबीअत से उसे कोई दिल यस्पी नहीं होती. अब अगर मस्गिल या'नी जिस से सुवाल किया गया वोह शप्स बीमार, टेन्शन का शिकार, कर्जदार और मुश्किलात से दो यार हो और अपने अमराज और दुजों की झईल भोल दे और परेशानियों की झैलरिस बयान करना शुइअ कर दे तो भुद साईल या'नी मिजाज पुर्सी करने वाला ईम्तिहान में पड जाअे ! लिहाजा जिस से तबीअत पूछी गई वोह याडे तो ब निय्यते शुके ईलाही मुप्तलिफ़ ने'मतों म-सलन : ईमान की दौलत मिलने, दामने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ के हाथ में होने का तसप्पुर बांध कर ईस तरह के जवाबात दे कर सवाब कमा सकता है : ﴿1﴾ الْحَمْدُ لِلَّهِ ﴿2﴾ مَا لِيكَ كَالِ الْيَهُودِ إِذْ سَأَلْتَهُمْ خُذُوا حُرْمَتِي أَوْ حُرْمَةَ آلِي مَرْيَمَ إِذْ يَقُولُ سُبْحَانَ اللَّهِ الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ ﴿3﴾ مَا لِيكَ كَالِ الْيَهُودِ إِذْ سَأَلْتَهُمْ خُذُوا حُرْمَتِي أَوْ حُرْمَةَ آلِي مَرْيَمَ إِذْ يَقُولُ سُبْحَانَ اللَّهِ الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ ﴿4﴾ अद्लाह तआला की रहमत है वगैरा. ईसी तरह अद्लाह तआला की अता कर्दा दीगर ने'मतों के मुकाबले में अपनी

करमाने मुस्तफ़ा : صلى الله تعالى عليه و اله وسلم : जिस ने मुज पर अेक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह عزوجل उस पर दस रडमते बेजता है. (स्)

तक्लीफ़ों को कमतर तसप्पुर करते हुअे भी शुके ँलाही की नियत से या रडमते ँलाही की उम्मीद पर बयान कर्दा यार जवाबात में से कोर्ष सा जवाब दे सकता है. याद रहे ! अगर बीमारी पर तवज्जोह है लेकिन ँस के बा वुजूद बिगैर शर-ँ रुप्सत के اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ, मालिक का करम है या ँसी तरह का कोर्ष जुम्ला कडना जिस से बीमार डोने के बा वुजूद ँसी मरज के मु-तअद्विक सिद्दहत बेडतर बताना मकसूद डो जिस के बारे में पूछा जा रहा है तो येह गुनाह त्भरा जूट है.

मिठाज पुर्सी के जवाब में जूट जोलने की 9 मिसालें

जब किसी से पूछा जाता है : आप की तबीअत कैसी है ? तो तबीअत नासाज डोने के बा वुजूद बसा अवकात ँस तरह के जवाबात मिलते हैं : ﴿1﴾ ठीक हूँ ﴿2﴾ बहुत ठीक हूँ ﴿3﴾ बिडकुल ठीक हूँ ﴿4﴾ तबीअत इर्स्ट क्लास है ﴿5﴾ अेवन तबीअत है ﴿6﴾ किसी डिस्म की तक्लीफ़ नहीं ﴿7﴾ मजे में हूँ ﴿8﴾ जर्ा बराबर भी कोर्ष मस्अला नहीं है ﴿9﴾ अेक दम इ्रिट हूँ.

मरीज की तरफ़ से दिये जाने वाले मजकूरा 9 जवाबात गुनाह त्भरे जूट हैं. अलबत्ता मरीज की जवाब देने में कोर्ष सडीह तावील (या'नी बयाव की सख्खी दलील) या दुरुस्त नियत डो तो गुनाह से बयत मुम्किन है मगर उमूमन बिगैर किसी नियत के डी मजकूरा और ँस से मिलते जुलते जूटे जवाबात दे दिये जाते हैं. अगर बीमारी जेड्न में न डो, जैसे आरिजी या'नी वक्ती तौर पर डो जाने वाले आराम पर बसा अवकात ँन्सान अपनी बीमारी त्भूल जाता है, तो अैसी डालत में "ठीक हूँ" वगैरा कड दिया तो गुनाह नहीं नीज मा'भूली मरज में

करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज पर दुरदे पाक पढना भूल गया वोड जन्त का रास्ता भूल गया. (جران)

बीमारी को ना काबिले जिक समजते हुअे या अक्सर मरज ठीक हो जाने और मा'भूली सा रह जाने की सूरत में भी “ठीक हूं” कहने में हरज नहीं अलबत्ता जैसे मौकअ पर बिल्कुल ठीक हूं, इस्ट क्लास तबीअत है, अवन हूं, जरा बराबर भी कोई मस्अला नहीं है और इसी मा'ना के दीगर अल्फाज कहना गुनाह बरा जूट शुमार होंगे.

कहने की अेक नियत

किसी ने तबीअत पूछी और मरीज के मुंह से बिगैर किसी नियत के बे इप्तिहार निकला : “الْحَمْدُ لِلَّهِ” तो इस में हरज नहीं. या बीमारी की तरफ तवज्जोह होने के आ वुजूह “ठीक हूं” के मा'ना में नहीं बल्के हर डाल में शुके इलाही बजा लाने की नियत से कहा : “الْحَمْدُ لِلَّهِ عَلَى كُلِّ حَالٍ” (या'नी हर डाल में अल्वाह का शुक्र है) तो इस सूरत में भी जूट नहीं.

मरीज को तसल्ली देने के लिये

बोले जाने वाले जूट की 13 मिसालें

(जो बात सय का उलट है वोड जूट है)

जैल में जो जुम्ले दिये जा रहे हैं येड जूट भी हो सकते हैं और नहीं भी, यूंडी इन के बोलने में रुप्सत की सूरत भी हो सकती है और नहीं भी, लिहाजा अगर कोई दूसरा शप्स येड जुम्ले बोले तो हम उस के बारे में गुनाहगार होने की बद्द गुमानी न करें अलबत्ता अपनी हद्द तक इस तरह के जुम्ले बोलते वक्त बात की सद्दाकत और अपनी नियत का ખयाल रખें. समजाने के लिये अेक मिसाल अर्ज है के जैसे अेक आदमी ने हमारे सामने मुरग्गन (या'नी तेल घी वाला) पाना

करमाने मुस्तफ़ی علیہ السلام : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदे पाक न पढा तलकीक वोड भद भप्त हो गया. (उरुः)

जाया और किसी दूसरे शप्स से कडा के मैं परहेज कर रहा हूं तो ज़रूरी नहीं येड कडना जूट हो क्यूंके हो सकता है के डॉक्टर ने महीने में अेक मर्तबा ँस तरड जाने की ँजाजत दी हो या येड जुम्वा कडते वक्त काँल की (या'नी कडने वाले की) तवज्जोड अपने जाने की तरफ़ न रडी हो. ँसी तरड अकिय्या जुम्बों में भी अहुत से अेडतिमालात व कियासात हो सकते हैं.

﴿1﴾ आप तो ﷻ अहुत सअ्र (या हिम्मत) वाले हैं ﴿2﴾ आप ने तो अडे अडे दुअ उठाअे हैं मगर कभी “उफ़” तक नहीं किया ﴿3﴾ आप ने तो हमेशा सअ्र ही किया है ﴿4﴾ वाड ! भई वाड ! आप के येडरे पर तो “पानी” आ गया है ﴿5﴾ ﷻ अब तो आप बिडकुल ठीक हो चुके हैं ! ﴿6﴾ आप तो बीमार लग ही नहीं रहे ! ﴿7﴾ आप की बीमारी भाग गई है ! ﴿8﴾ नहीं ! नहीं ! आप को तो कुँ भी नहीं हुआ है ﴿9﴾ मुबारक हो ! आप की सारी रिपोर्टे क्लीयर आई हैं ﴿10﴾ तशवीश नाक मरज पर मुत्तलअ होने के आ वुजूड कडना : “अबराने की कोई आत नहीं, डॉक्टर तो ज्वाड म ज्वाड ही उरा देते हैं” ﴿11﴾ कुलां को भी येड मरज हुआ था दो दिन में ठीक हो गया था तुम भी जल्दी ठीक हो जाओगे (जिस मरीज का अवाला दे रहे होते हैं उस का अकीकत की दुन्या में कोई वुजूड नहीं होता) ﴿12﴾ अुआर में तपते मरीज की नज्ज पर अथ रअ कर जान अूज कर कडना : “नहीं भाई ! नहीं ! तुम्हें कोई अुआर वुआर नहीं है” ﴿13﴾ दिल की ताईद न होने के आ वुजूड मड्ज तसल्वी देने के लिये सप्त बीमार से कडना : “भाई ! तुम तो छोटी सी बीमारी में दिल अार बैठे !”

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा सुबह और दस मरतबा शाम दुरुदे पाक पढा उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (मुत्तावा)

मरीज़ के जूट बोलने की 13 मिसालें

(जो बात सच का उलट है वोह जूट है)

- «1» केन्सर वगैरा के अन्देशे के मौकअ पर कहना : “मुझे अपनी बीमारी की कोई परवा नहीं, बस छोटे छोटे बख्यों की झिंक है” «2» मेरे पास बिल्कुल गुन्जाईश नहीं, मैंँ ईलाज का ખર્च भरदाशत कर ही नहीं सकता (हालां के अख्शी ખासी रकम जम्अ कर के रખी होती है) «3» गुन्जाईश होने के आ वुजूद लोगों की हमददियां लेने के लिये कहना : मेरे पास खाने को पैसे नहीं हैंँ ईलाज के लिये कहां से लाऊँ ! «4» मैंँ कुल परहेजी कर रहा हूँ (हालां के कहीं द्वा’वत हो तो “जनाब” सब से पहले ज्ञा पड़ोयते हैंँ) «5» डॉक्टर साहिब ! बिल्कुल टार्थम टू टार्थम दवा पी रहा हूँ (हालां के ખूब नागे कर रहे होते हैंँ) «6» शूगर के मरीज़ का कहना : मैंँ मिठाई तो खपता तक नहीं (जब के बेयारे मिठाई खाने से बाज़ नहीं रह पा रहे होते) «7» किसी लारी लरकम शप्स को वज़ून कम करने का हमददना मशवरा मिलने पर जवाब : मैंँ खाने पीने मेंँ काई अेहतियात कर रहा हूँ (हालां के कढाई गोशत हो या फ़ाय गोशत, शरबत हो या ठन्डी बोतल, कोरमा हो या बिरयानी, कबाब हो या समोसा जो ली ईन के सामने आता है बय कर नहीं जाता !) «8» मरज़ की तरफ़ तवज्जोह होने के आ वुजूद कहना : लला यंगा हूँ «9» मैंँ बीमार थोड़ी हूँ «10» गिले शिक्वे का अम्भार लगाने के आ’द कहना : “मैंँ ने सख्र का दामन हाथ से नहीं छोडा” (येह गुनाह लरा जूट उसी सूरत होग़ा जब के बोलते वक्त सख्र की ता’रीफ़ की तरफ़ तवज्जोह हो) «11» तकलीफ़ की शिदत के आ वुजूद कहना : “नहीं ! नहीं ! मुझे कोई तकलीफ़ नहीं हो रही !” «12» मुझे बीमारी का गम नहीं अपने

करमाने मुस्तकी. صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा ठिक हुआ और उस ने मुझ पर दुःख शरीक न पड़ा (उस ने जका की. (عبدالرزاق)

वक्त के आगेअ होने का अइसोस हो रहा है ﴿13﴾ पैराती शिक्षापाने में मुफ्त एलाज करवाने के आ वुजूद कलना : “एलाज के सारे अमराजत में ने खुद अरदाशत किये हैं किसी ने जूटे मुंह भी तआवुन की पेशकश नहीं की.”

बीमारियों के 78 इहानी एलाज

(अयान कर्दा तिब्बी और देसी एलाज अपने तबीअ के मशवरे से कीजिये)

बुभार के चार इहानी एलाज

﴿1﴾ बुभार वाला अ कसरत **بِسْمِ اللَّهِ الْكَبِيرِ** पढता रहे.

﴿2﴾ गरमी का बुभार हो तो **يَا حَىُّ يَا قَيُّوْمُ** 47 बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के यमडे या रेगजीन या कपडे में सी कर गले में डाल दीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** बुभार जाता रहेगा.

﴿3﴾ **يَا غَفُورُ** कागज पर तीन बार लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के यमडे या रेगजीन या कपडे में सी कर गले में डाल या आजू पर बांध दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** हर डिस्म के बुभार से नजात मिलेगी.

﴿4﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 30 बार कागज पर लिख कर पानी की बोतल में डाल कर मरीज को दिन में तीन बार थोडा थोडा पानी पिलाईये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** बुभार उतर जायेगा, जरूरतन मजीद पानी शामिल करते रहिये. (मुद्दते एलाज : ता हुसूले शिक्षा)

﴿5﴾ जैसे बुभार का इहानी एलाज जो एवाओं से न जाता हो अमल के दौरान मरीज सूती (या'नी COTTON के) कपडे पहने रहे (केटी या दूसरे मसूई धागे के अने हुअे कपडे न हों) अअ कोई दुस्त कुरआन पढने वाला आ वुजू हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ अ आवाजे

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं डियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूँगा. (क़ुरआन)

बुलन्द 21 बार सू-रतुल क़द्र ईस तरह पढे, के मरीज सुने, मरीज पर दम भी करे और पानी की बोतल पर भी दम करे. मरीज वक्तन इ वक्तन उस में से पानी पीता रहे. येह अमल तीन दिन तक मुसल्लल कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** बुभार यला जाओगा.

﴿6﴾ नींद न आने के दो इहानी घलाज

जिस को दई वगैरा के सबब नींद न आती हो तो उस के पास **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** कसरत से पढने से उस को **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** नींद आ जाओगी नीज अह्लाहु रब्बुल ईज़ज़त **عَزَّوَجَلَّ** की रहमत से मरीज जल्द सिद्धत याब भी हो जाओगा. (मरीज को पढने की आवाज न जाओ ईस की खेदतियात कीजिये)

﴿7﴾ अगर नींद न आती हो तो **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 11 बार पढ कर अपने ठीपर दम कर दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** नींद आ जाओगी.

भारवरो के काटने और उन से हिफ़ाजत के 3 इहानी घलाज

﴿8﴾ जहां जहरीले जानवर ने काटा हो उस के गिई उंगली घुमाता हुवा अक सांस में सात बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ कर दम करे **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** जहूर का असर जाईल (या'नी अत्म) हो जाओगा.

﴿9﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 11 बार लिख (या लिखवा) कर विलादत के भा'द झौरन नहला कर बख्ये को पलना देने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** मूजी जानवरो और पेयिश के मरज से हिफ़ाजत होगी.

﴿10﴾ अगर रास्ते में कुत्ता भोंकने और हम्ला करने लगे तो **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** 3 बार पढ लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** कुत्ता युपयाप वापस यला जाओगा.

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : صَلَى اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરુદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમહારે લિયે તહારત હૈ. (અબુલ્લી)

જિન્નાત કે અ-સરાત કે 3 રૂહાની ઇલાજ

﴿11﴾ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ 21 બાર જો રાત સોતે વક્ત પઢ લે, ઉસ રાત વોહ હર કિસ્મ કે ના-ગહાની (યા'ની અયાનક હોને વાલે) હાદિસાત, શરીર ઈન્સાન વ જિન્નાત કે હમ્લોં ઓર અયાનક મોત્ત સે મહફૂઝ રહે. اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ

﴿12﴾ يَا اللّٰهُ يَا حَىُّ يَا قَیُّوْمُ કા આસેબ ઝદા બ કસરત વિદ્ કરતા રહે, આસેબ જાતા રહેગા. اِنْ شَاءَ اللّٰهُ تَعَالَى

﴿13﴾ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 41 બાર લિખ (યા લિખવા) કર પ્લાસ્ટિક કોટિંગ કર કે ચમડે યા રેગ્ઝીન યા કપડે મેં સી કર બાઝૂ મેં બાંધ લે યા ગલે મેં પહન લે, اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ અ-સરાત દૂર હોગે.

﴿14﴾ સોતે મેં કોઈ ચીઝ તંગ કરતી હો યા.....

નીંદ ન આતી હો, ડરાવને ખ્વાબ આતે હોં, નીંદ મેં જિસ્મ પર વઝન પડતા હો યા એસા મહસૂસ હોતા હો જૈસે કોઈ દબોચ રહા હૈ નીઝ જિન્ન, જાદૂ વગૈરા બલા વ આફત સે હિફાઝત કે લિયે સોતે વક્ત ઉમ્ર ભર રોઝાના બિલા નાગા યેહ અમલ કીજિયે : દોનોં હાથોં કી હથેલિયાં ફૈલા કર તીનોં ફુલ શરીફ (યા'ની સૂ-રતુલ ઈખ્લાસ, સૂ-રતુલ ફલક ઓર સૂ-રતુન્નાસ) એક એક બાર પઢ કર ઉન પર દમ કર કે સર, યેહરે, સીને ઓર આગે પીછે જહાં તક હાથ પહોંચે સારે બદન પર ફેરિયે. ફિર દોબારા, સેહબારા (યા'ની તીસરી બાર) ઈસી તરહ કીજિયે. اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ ઈસ કા ફાએદા ખુદ હી દેખ લેંગે.

જાદૂ કે 2 રૂહાની ઇલાજ

﴿15﴾ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ 101 બાર પઢ કર સેહર ઝદા (યા'ની જિસ પર જાદૂ

﴿ 37 ﴾ इरमाने मुस्तफ़ा : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالْوَسْمُ : तुम जहां भी हो मुज पर दुर्रद पढो के तुम्हारा दुर्रद मुज तक पछोयता है. (ط. 37)

किया गया हो (उस) पर दम कर दिया जाये या येही लिख कर धो कर पिला दिया जाये तो **﴿ 37 ﴾** **سَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ** से छर (या'नी जदू) का असर खत्म हो जायेगा.

﴿16﴾ मरीज के सर से ले कर पाउं के अंगूठे तक आस्मानी रंग के ग्यारह सूती धागे नाप लीजिये, उन ग्यारह धागों को दूो मर्तबा तह कर लीजिये, अब धागे के सिरे पर अेक ढीली गिरह लगाईये फिर अेक बार सू-रतुल इलक पढ कर उस गिरह में इंक मारिये और झौरन कस दीजिये, इसी तरीके पर ग्यारह गिरहें लगाने के बा'द धागे को दहक्ते कोअेलों में डाल दीजिये. (गेस के यूल्हे पर तवा वगैरा रभ कर उस पर भी जला सकते हैं) अगर जदू हुवा तो बढभू आयेगी, जब तक बढभू आती रहे रोजाना अेक बार येह अमल करते रहिये, **﴿ 37 ﴾** **سَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ** जदू का असर खत्म हो जायेगा.

इलिज व लक्वा के 2 इहानी इलाज

﴿17﴾ **﴿ 17 ﴾** **سَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ** 11 बार नई रिकाबी पर लिख कर पीने से लक्वे से नजात मिलेगी.

﴿18﴾ **﴿ 18 ﴾** **سَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ** 100 बार सोते वक्त पढने से शयातीन की शरारत नीज इलिज और लक्वे की आफत से डिइजत होगी.

लक्वे का देसी इलाज : मग्जे रीठा इस्बे जडूरत (देसी दवा की दुकान से) ले कर कूट लीजिये, अब खालिस शइद डाल कर यने के बराबर गोदियां बना लीजिये, अेक अेक गोली सुबह व शाम नीम गर्म दूध पत्ती¹ याय के साथ इस्ति'माल कीजिये. यन्द दिन या यन्द इइते या यन्द माह के इस्ति'माल से **﴿ 37 ﴾** **سَاءَ اللَّهُ عَلَيْهِ** शिइा नसीब हो जायेगी.

¹ : दूध पत्ती का मा'ना : अैसी याय बनाना जिस में पानी का इस्ति'माल न हुवा हो.

करमाने मुस्तक़। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतबा दुरद पाक पढा अल्लाह उर उस पर सो रडभते नाजिल करमाता है. (भरान)

हेपाटाइटिस का इहानी घलाज

﴿19﴾ हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ सूरअे कुरैश 21 बार (अव्वल आभिर 11 बार दुरद शरीफ़) पढ (या पढवा) कर आभे जमजम शरीफ़ या उस पानी में जिस के अन्दर आभे जमजम शरीफ़ के यन्द कतरे शामिल हों दम कीजिये और रोजाना सुबह, दो पहर और शाम पी लीजिये. **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** 40 रोज के अन्दर अन्दर शिफ़ायाब हो जाअेंगे. (सिर्फ़ अेक बार दम किया हुवा पानी काई है इरभे जरुरत मज़ीद पानी मिला लीजिये)

यरकान (JAUNDICE) के 4 इहानी घलाज

﴿20﴾ छोटे बच्चे को यरकान (पीलिया, JAUNDICE) हो गया हो तो हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ सू-रतुल फ़ातिहा 21 बार पढ कर पियाज पर दम कर के उस के गले में पढना दीजिये. **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** शिफ़ा हासिल होगी.

﴿21﴾ सू-रतुल बय्यिनह लिख कर ता'वीज बना कर गले में पढना दीजिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ الْعَزِیْزُ** यरकान जाता रहेगा.

﴿22﴾ **سَبِّحْ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ** ① (28:1, العشر: 1) 101 बार पढ कर पानी पर दम कर के पिलाना यरकान के लिये **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** निहायत मुफ़ीद रहेगा.

﴿23﴾ **يٰٰحَسِبُّ** 300 बार पढ कर पानी पर दम कर के छक्कीस (21) दिन तक पिलाने से **اِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** यरकान से शिफ़ा हासिल होगी.

दांतों के दर्द के 2 इहानी घलाज

﴿24﴾ सूरअे यासीन की येह आयत : **اِنَّ سَلٰمًا** तीन

करमाने मुस्तफ़ा علی اللہ تعالیٰ عنہ و آلہ وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगों में से क्यूस तरीन शप्स है. (ज़िबे सिया)

बार पढ कर अपनी उंगली पर दम कर के दांतों पर मलिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** दई जाता रहेगा.

﴿25﴾ **يَا أَلَلَّهُ** 7 बार कागज़ पर लिख (या लिखवा) कर ता'वीज़ की तरफ लपेट कर (बेहतर येह है के प्लास्टिक कोटिंग कर के) दाढ के नीचे दबाने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** दाढ का दई दूर हो जाओगा.

दांत के दई का देसी नुस्खा : मसूढ़ों में दई या सूजन हो, पीप आता हो तो तकरीबन 5 ग्राम इट्करी को अेक गिलास पानी में गर्म कर लीजिये और जब इट्करी पिघल कर पानी में धुल जाअे तो उस को दांतों और मसूढ़ों पर मल लीजिये मसूढ़ों में दई या सूजन हो या पीप आती हो, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** फ़ाअेदा हो जाओगा.

﴿26﴾ दांत के दई का एकसीर अमल

अगर दांत में सप्त दई हो तो बा वुजू सूरअे कुरैश 21 बार पढ कर नमक पर दम कीजिये और वोह नमक दई वाले दांत पर मलिये और दांतों के दरमियान रफ़िये दिन में दो तीन बार येह अमल करने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** फ़ाअेदा हो जाओगा.

﴿27﴾ पित्ते और मसाने की पथरी का इहानी इलाज

يَا أَلَلَّهُ 46 बार सादा कागज़ पर लिख कर पानी में धो कर पीने से पित्ते और मसाने की पथरी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** रेजा रेजा हो कर निकल जाओगी. (मुदते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

कय्ये पपीते के ठरीअे गुर्दे और पित्ते की पथरी का इलाज

कय्ये पपीते पर सईद या काला नमक लगा लीजिये और थोडी सी पिसी लुई काली मिर्य छिउक लीजिये और दिन में तीन मर्तबा

करमाने मुस्तक़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरदे पाक न पड़े. (६८)

(तकरीबन दस दस ग्राम) भूष अस्थी तरल यभा कर पाईये, यभाना दुशवार हो तो पीस कर भी ईस्ति'माल कर सकते हैं. **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** गुर्दे (और पित्ते) की पथरी निकल जायेगी. जियादा मिकदार में न पाईये क्यूंके येह सकील (या'नी वजनी) होने के सबब देर से हज़्म होता है (अगर्चे दूसरी चीजों को जल्द हज़्म करने में मदद देता है).

गुर्दे और पेशाब की बीमारियों के 3 इहानी धलाव

﴿28﴾ **وَقِيلَ يَا أَرْضُ ابْلَعِي مَاءَكَ وَابْلَعِي وَقِيلَ لِيَوْمِ الظُّلُمِ** (१२५, १२६) थोडा थोडा पेशाब बार बार आता हो तो ईस के लिये ईन आयाते मुभा-रका को लिख (या लिखवा) कर बाजू में बांध या गले में पहन लिया जाये तो **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** शिफा हासिल होगी.

﴿29﴾ अेक बार दुरद शरीफ़ पढ कर हर बार **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सूरअे अलम नशरह 7 बार फिर आबिर में अेक बार दुरद शरीफ़ पढ कर दम कर दीजिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** गुर्दे का दर्द भत्म हो जायेगा.

﴿30﴾ गुर्दों की बीमारी के सबब पेशाब थोडा थोडा आता हो या पेशाब में जलन और खुत्मन होती हो और कोई दवा कारगर न होती हो तो बारिश के पानी पर आ वुजू हर बार **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सूरअे अलम नशरह ग्यारह बार पढ कर दम कर दीजिये और दिन में बार बार (सुबह नाश्ते से कब्ल, जोहर के वक्त, अस्र के बाद और सोते वक्त) तीन तीन घूंट वोह पानी पियें. हर बार पीने से पहले सात बार दुरदे ईब्राहीम पढ लीजिये. **إِنْ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** गुर्दे की बीमारी और पेशाब की जलन वगैरा दूर हो जायेगी.

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (क़ुरआन)

गुर्दे की बीमारियों के लिये तिब्बी नुस्खा

रोजाना सुबह नहार मुंछ तीन ग्राम भीठा सोडा पानी से 'इस्ति'माल कीजिये (तबीब की 'इज्जत' से), प्यास हो या न हो ज़ियादा से ज़ियादा पानी 'इस्ति'माल कीजिये. ग्यारह दिन में **إِنْ شَاءَ اللهُ** आराम आ जायेगा. अगर मरज पुराना है तो 41 दिन तक येह 'इलाज' कीजिये.

पेशाब में मून आने का इहानी इलाज

﴿31﴾ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰی ۝ یَسْبِغُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۝ وَهُوَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ﴿٣١﴾ (الحشر: 24)

कत्मी मसाने या गुर्दे में पथरी के सबब या गर्म तासीर वाली चीजों के कस्स्ते 'इस्ति'माल से पेशाब में मून आने लगता है. नीज़ लाल भिर्य का ज़ियादा 'इस्ति'माल पेशाब में जलन पैदा करता है. मरीज को याहिये के गर्म तासीर वाली चीजों और लाल भिर्यों से परहेज़ करे. हर दो घन्टे बा'द अक्वल आभिर तीन तीन बार दुरद शरीफ़ के साथ 'उपर दी हु'ई आयते मुबा-रका तीन बार पढ कर पानी पर दम कर के पी लीजिये. (मुदते 'इलाज' : ता हुसूले शिफ़ा)

नाफ़ का इहानी इलाज

﴿32﴾ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝ سَلَّمَ ۝ قَوْلًا مِّن رَّبِّ رَحِیْمٍ ﴿٣٢﴾ (یس: 08)

कागज़ पर बा वुजू लिख (या लिखवा) कर प्लास्टिक कोटिंग कर के कपडे वगैरा में सी कर नाफ़ पर 'इस' तरह बांधिये के नाफ़ के नीचे न जाये. **إِنْ شَاءَ اللهُ** शिफ़ा हासिल होगी.

अहतिलाम के दो इहानी इलाज

﴿33﴾ सूरअे नूह सोते वक्त अेक बार पढ कर अपने 'उपर दम' कीजिये. **إِنْ شَاءَ اللهُ** अहतिलाम नही होगा.

﴿34﴾ کرمانے مستحقاً۔ عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइद शरीफ़ पढो अल्लाह उजल तुम पर रहमत भेजेगा. (अबु सरी)

﴿34﴾ सोते वक्त हिल की जगह शहाहत की उंगली से “या उमर” लिखने की आदत बनाईये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** शैतान के दप्ल से मडकूज रहते हुअे अेहतिलाम से बरेंगे.

आंभों के अमराज के 3 इहानी धलाज

﴿35﴾ **يَا شَكُورُ** अगर आंभों में रोशनी कम हो गई हो तो 41 बार पढ कर पानी पर दम कर के आंभों पर येह पानी मलिये. (मुदते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

﴿36﴾ नजर कमजोर हो जाअे या खली जाअे तो “**يَا رَحْمَنُ يَا رَحِيمُ يَا اللَّهُ يَا سَلَامُ**” 41 बार (अवल आभिर अेक बार दुइद शरीफ़) पढ कर दोनों हाथों में पानी ले कर दम करे और मुंड पर डाले और आंभों पर मले **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** फ़ाअेदा होगे. (मुदते इलाज : मुसव्सल 7 दिन) म-दनी कूल : मुंड पर डालते वक्त कोई पाक कपडा वगैरा बिछा लीजिये ताके दम किये हुअे पानी की बे अ-दबी न हो.

﴿37﴾ **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** हर नमाज के आ'द तीन बार पढ कर उंगली पर दम कर के अपनी आंभों पर लगाईये. येह अमल उम्र भर जारी रखिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** बीनाई की कमजोरी दूर होगी नीज सईद और काले मोतिये से भी डिफ़ाजत होगी.

कान के दई का इहानी धलाज

﴿38﴾ **يَا سَمِيعُ** 21 बार (अवल आभिर तीन मर्तबा दुइद शरीफ़) पढ कर मरीज के दोनों कानों में कूक मार दीजिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कान के दई से छुटकारा मिलेगा. (मुदते इलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم: मुज़ पर कसरत से दुरुद पक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुरुद पक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज़ि़रत है. (भा.स.भ.)

नज़ला मुक़ाम का इहानी धलाज

﴿39﴾ हर बार بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ के साथ सू-रतुल इतिहा तीन बार (अव्वल आभिर तीन मर्तबा दुरुद शरीफ़) पढ कर तीन रोज तक रोजाना मरीज़ पर दम कीजिये. إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ नज़ला मुक़ाम से नज़ात हासिल होगी.

﴿40﴾ दिल की घडकन बढ जाने का इहानी धलाज

101 سَلَّمَ قَوْلًا مِنْ رَبِّ رَحِيمٍ 51: सूराये यासीन की येह आयत : 51 बार, अव्वल आभिर तीन तीन बार दुरुद शरीफ़ पढ (या पढवा) कर किसी जाने या पीने की थीज़ पर दम कर के जा या पी लीजिये, إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ शिफ़ा मिलेगी. (मुदते धलाज : ता हुसूले शिफ़ा)

﴿41﴾ दिल के सूराभ का इहानी धलाज

75 لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ बार पढ कर दिल में सूराभ वाले बख्ये नीज़ घबराहट, दिल और सीने के तमाम मरीज़ों के सीने पर दम करना बि इज़लिही तआला मुफ़ीद है.

न-ज़रे बढ के 3 इहानी धलाज

﴿42﴾ 60 لَا إِلَهَ إِلَّا اللّٰهُ बार पढ कर दम कीजिये إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ न-ज़रे बढ का असर ज़ता रहेगा.

﴿43﴾ हर थीज़ जाने पीने से कबल بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ पढ लेने का आदी إِنْ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ न-ज़रे बढ से महुकूज़ रहेगा.

नज़र और दई का इहानी धलाज

﴿44﴾ 786 يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ बार कागज़ पर लिख (या लिखवा) कर

करमाने मुस्तक। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुद पाक न पढ़ा। तलकीक वोह बढ भप्त हो गया. (अबु)।

ता'वीज की तरह लपेट कर प्लास्टिक कोटिंग कर के रेग्जीन या कपडे वगैरा में सी कर बाजू में बांध या गले में पहन लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** न-जरे बढ का असर भत्म हो जायेगा. जिस के हाथ पाँव में दई हो उस के लिये भी येह ता'वीज **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** मुझीद है.

नजर और हर किसम के शर से बख्यों की हीफात के लिये

﴿45﴾ बा वुजू हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ तीन तीन बार सू-रतुल इतिहा, सू-रतुल इल्हास, सू-रतुल इलक और सू-रतुनास (अव्वल आभिर तीन बार दुरुद शरीफ) पढ कर बख्यों पर दम कीजिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** बख्ये नजर लगने वगैरा से मडकूज रहेंगे. (येह अमल रोजाना सुब्ह व शाम या'नी दिन में दो बार करना है)

मिर्गी के 3 इहानी धलाज

﴿46﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 66 बार रोजाना पढ कर मिर्गी के मरीज पर दम कीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** इअेदा होगे. धलावा अर्जी बुभार, नजला, जुकाम, पांसी हर किसम के दई और आंभों की बीमारियों के लिये भी येह इहानी धलाज मुझीद है. (मुदते धलाज : ता हुसूले शिफा)

﴿47﴾ **يَا اللَّهُ يَا رَحْمَنُ** 40 बार अेक सांस में पढ कर जिसे मिर्गी का दौरा पडा हो उस के कान में दम कीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** झौरन डोश में आ जायेगा.

﴿48﴾ **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सू-रतुशम्स पढ कर मिर्गी वाले के कान में झूंक मारना बहुत मुझीद है.

सर के बाल ाडने का इहानी धलाज

﴿49﴾ बा वुजू हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सू-रतुल्लैल 41 बार पढ कर सरसों या नारियल के तेल की बोतल पर दम कर लीजिये,

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुँज पर दस भरतबा सुब्द और दस भरतबा शाम दुइरे पाक पढा (उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (सुन्न अरबाह)

रोजाना सोते वक्त सर पर ँस तेल की मालिश कीजिये. कुछ दिन मालिश करने से **اِنَّ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** सर के बाल जडना बन्द हो जायेंगे. दाढी के बाल जडते हों तो उस के लिये भी येह अमल मुफ़ीद है. (जरतन उसी बोतल में दूसरा तेल शामिल कर लीजिये)

गन्ज दूर करने का अमल

जैतून के तेल में शहद एक यम्मय और पिसी हुई दारचीनी आधा यम्मय मिला कर गन्ज पर लगाईये. कुछ अर्सा मुसदसल ँस्ति'माल करने से **اِنَّ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** नअे बाल निकलना शुइअ हो जायेंगे.

सूजन का इहानी ँलाज

﴿50﴾ अगर बदन पर कहीं वरम या'नी सूजन हो गई हो तो **لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ** 67 बार लिख (या लिखवा) कर अपने पास रभिये या ता'वीज बना कर पहन लीजिये **اِنَّ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** वरम दूर हो जायेगा.

मूठी अमराज से हिफ़ात का इहानी नुस्खा

﴿51﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللهُ** 76 बार कागज वगैरा पर लिख (या लिखवा) कर आबे जमजम शरीफ़ से धो कर पीने वाला **اِنَّ شَاءَ اللهُ تَعَالَى** मूठी अमराज से महकूज रहेगा.

कमर के दर्द का इहानी ँलाज

﴿52﴾ इज की सुन्नतों और इर्ज के दरमियान हर बार **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ 41 बार सू-रतुल फ़ातिहा पढिये (मुदत : ता हुसूले शिफ़ा) अक सादिब का कलना है : “ **اِنَّ كَيْدَ اللهِ عَزَّوَجَلَّ** मैं ने येह इहानी ँलाज किया तो मेरी कमर का दर्द यला गया.”

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه و آله وسلم : जिस के पास मेरा जिक हुआ और उस ने मुज पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जफ़ा की. (عبارات)

आधे और पूरे सर के दई के 5 इहानी धलाज

﴿53﴾ **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ७७ पढ कर सर पर दम कीजिये

दई जाता रहेगा येही कागज पर लिख कर ता'वीज बना कर सर में बांध लेने से भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ७७ फ़ाअेदा हो जाअेगा.

﴿54﴾ **يَا سَلَامُ** 11 बार पढ कर दम कीजिये, 3 या 7 या 11 बार ईसी

तरह पढ कर दम कीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** 11 बार की ता'दाद पूरी होने से कबल ही आधे सर का दई काफ़ूर (या'नी दूर) हो जाअेगा, येह अमल पूरे सर के दई के लिये भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ७७ मुफ़ीद है.

﴿55﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 65 बार आ'द नमाजे अस्सर पढ कर सर पर दम करने

से आधे और पूरे सर का दई अल्लाह पाक के करम से भत्म हो जाअेगा.

﴿56﴾ ज़बान पर अेक चुटकी नमक रभ कर 12 मिनट के आ'द अेक

गिलास पानी पी लीजिये सर में कैसा ही दई हो **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** ७७ फ़ाअेदा हो जाअेगा. (छाई बलड प्रेशर के मरीज येह धलाज न करें, के उन के लिये नमक का ईस्ति'माल नुकसान देह होता है)

﴿57﴾ **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** ७७ **بِسْمِ اللَّهِ رَبِّ الْأَرْضِ وَالسَّمَاءِ**

بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي بِيَدِهِ شَفَاءُ ७७ **بِسْمِ اللَّهِ الَّذِي لَا يَضُرُّ مَعَ اسْمِهِ شَيْءٌ**

मरीज के सर पर हाथ रभ

कर तीन बार या सात बार येह दुआ पढ कर सर पर दम कीजिये.

إِنْ شَاءَ اللَّهُ ७७ शिफ़ा हासिल होगी.

करमाने मुस्तफ़ा على الله تعالى عليه و آله وسلم : श्री मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा मैं क्रियामत के दिन उस की शक्राअत करूँगा. (क्रआमाल)

दर्र सर, यक्कर आने और दिमागी कमजोरी का इहानी घलाज

﴿58﴾ **أَسْكُنْ سَكَنَتِكَ بِالَّذِي لَهُ مَا فِي اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ**

जिस के सर में दर्र हो या यक्कर आते हों उस के सर पर दर्र की जगह हाथ रख कर येह कलिमात सात बार पढ कर सर पर झूंक मार दीजिये. ईस्लामी बहन खुद अपने सर के दर्र की जगह पकड़ ले और उस का महरम या शोहर पढ कर उस के सर पर झूंक मार दे, मरीज से पूछ लीजिये, अगर अभी दर्र बाकी हो तो दोबारा येही अमल कीजिये, यन्द मर्तबा करने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** सर का दर्र खत्म हो जायेगा और दिमागी कमजोरी दूर होगी मगर दिमागी कमजोरी के लिये येह जरूरी है के येह अमल रोजाना किसी ओक ही वक्त में (म-सलन रोजाना दिन के 12 बजे) सात दिन तक मुसल्लस किया जाये.

दीनी इम्तिहान में काम्याबी के लिये

﴿59﴾ दीनी मद्रसे का तालिबे इल्म, इम्तिहान में काम्याबी के लिये पांथों नमाजों के बाद बा वुजू हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सू-रतुल इफ़्वास 16 मर्तबा पढे और फिर अल्लाह तआला से इम्तिहान में काम्याबी की दुआ मांगे, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** उसे काम्याबी हासिल होगी. येह अमल अपने वतन में या बैरने मुल्क जाईज मुला-जमत के हुसूल की खातिर इन्टरव्यू में काम्याबी के लिये भी **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** कारआमद है.

आइतों, बीमारियों, बे रोजगारियों के दो इहानी घलाज

﴿60﴾ **يَا سَلَامُ** : उठते बैठते, चलते, फिरते, बा वुजू पढते रहिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى**

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ: મુઝ પર દુરૂદે પાક કી કસરત કરો બેશક યેહ તુમહારે લિયે તહારત હૈ. (શી-૧)

અમરાઝ વ આફાત સે નજાત મિલેગી ઓર રોઝી મેં બ-ર-કત હોગી.

﴿61﴾ દાઈમી મરીઝ હર વક્ત **يَا مُعِيْدُ** પઢતા રહે, અલ્લાહુ રબ્બુલ ઈઝ્ઝત સિહ્હત ઈનાયત ફરમાએગા.

ખાવન્દ કો નેક નમાઝી બનાને કે લિયે

﴿62﴾ ખાવન્દ બુરી આદત કા શિકાર હો ઓર ઘર મેં હર વક્ત ઝગડા રહતા હો તો બીવી હર બાર **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** કે સાથ ગ્યારહ મર્તબા સૂ-રતુલ ફાતિહા પઢ કર પાની પર દમ કરે ફિર અપને ખાવન્દ કો પિલાએ, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** શોહર નેકી કે રાસ્તે પર ગામઝન હો જાએગા. (શોહર બલ્કે કિસી કો ભી ઈસ અમલ કા પતા ન ચલે વરના ગલત ફહમી કે સબબ પરેશાની હો સક્તી હૈ) જબ જબ મૌકઅ મિલે યેહ અમલ કર લિયા જાએ, દમ કિયા હુવા પાની ફૂલર મેં મૌજૂદ પાની મેં ભી ડાલા જા સક્તા હૈ, બેશક ખાવન્દ કે ઈલાવા ઓર અફરાદે ખાના ભી ઉસ મેં સે પિયેં, ઝરૂરતન દૂસરા પાની ફૂલર મેં ડાલતે રહેં.

કેન્સર કે 4 રૂહાની ઇલાજ

﴿63﴾ અવ્વલ આબિર ગ્યારહ બાર દુરૂદે ઈબ્રાહીમ ઓર દરમિયાન મેં “સૂરએ મરયમ” પઢ કર પાની પર દમ કીજિયે, ઝરૂરતન દૂસરા પાની મિલાતે રહિયે, મરીઝ વોહી પાની સારા દિન પિયે, યેહ અમલ ચાલીસ દિન તક બિલા નાગા કરતે રહિયે, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** શિક્ષા હાસિલ હોગી. (દૂસરા ભી પઢ કર દમ કર કે મરીઝ કો પિલા સક્તા હૈ)

﴿64﴾ યેહ આયતે કરીમા : (۱۶: ۱۷۹) **أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ وَهُوَ اللَّطِيفُ الْخَبِيرُ**

2022 બાર (અવ્વલ આબિર 11 બાર દુરૂદ શરીફ) પઢ કર કેન્સર કે

करमाने मुस्तफ़ा : على الله تعالى عليه و اله وسلم : तुम जहां भी हो मुज पर दुरद पढो के तुम्हारा दुरद मुज तक पहुँचता है. (طبرانی)

मरीज़ पर दम कीजिये पानी और दवा पर दम कर के भी पिलाईये,

إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى बहुत फ़ाअेदा होगा. (मुदत : ता हुसूले शिफ़ा)

﴿65﴾ सात दिन तक रोजाना आ वुजू **يَارْقِيْبُ** 100 बार (अव्वल आबिर 11 बार दुरद शरीफ़) पढ कर केन्सर के मरीज़ पर दम कीजिये, अगर जम्म हो तो उस पर भी दम कीजिये अगर केन्सर का जम्म जिस्म के अन्दरूनी हिस्से या पर्टे की जगह हो तो जम्म की जगह पर कपडे के ठीपर दम कर दीजिये. अगर जिस्म के बाहर जम्म है तो सरसों के तेल पर भी दम कर दीजिये और वोह तेल मरीज़ जम्म पर लगाता रहे, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** जम्म सहीह हो जाअेगा और केन्सर दूर होगा.

﴿66﴾ केन्सर प्वाल किसी किस्म का हो, अेक किलो जैतून के तेल में 100 ग्राम लुहदी अख़ी तरह पका कर छान कर रभ लीजिये, मरीज़ हर गिज़ा के आ'द बीस बीस कतरे पी कर ठीपर नीम गर्म पानी पी लिया करे. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** फ़ाअेदा होगा.

रोजाना पिस्ते पाछये और जुद को केन्सर से बचाछये

अेक जदीद तहकीक के मुताबिक रोजाना मुनासिब भिकदार में पिस्ते जाने से फेफ़ों और दीगर कर्ह किस्म के केन्सर का भतरा कम हो जाता है. केन्सर पर काम करने वाली अेक “अमरीकी अेसोसीअेशन” के तहत्त की जाने वाली तहकीक के मुताबिक पिस्ते में विटामिन E की अेक भास किस्म होती है जिस के जरीअे फेफ़ों समेत कर्ह अक्साम के केन्सर के भिलाफ़ मजभूत मुदा-फ़-अती निजाम (Strong Immune System)

करमाने मुस्तकी علی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जिस ने मुज पर दस मरतबा दुरदे पाक पढा अल्लाह उस पर सो रलमतें नाजिल करमाता है. (ब्रान)

हासिल किया जा सकता है.

कुवते हाकिमा के लिये यार अवरार

﴿67﴾ **يَا قَوِي** 11 बार, पांथों नमाजों के आ'द सर पर दालना (या'नी सीधा) हाथ रफ कर पढिये. (जन्ती जेवर, स. 605)

﴿68﴾ रात को सोते वक्त “**يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ**” तीन मरतबा पढ कर उ बादाओं पर दम कीजिये, अक बादाम उसी वक्त, अक सुब्द नहार मुंड और अक, दो पहर के वक्त पाँथये. वालिदैन भी येह अमल कर के बर्यों को पिला सकते हैं. (मुदत : 21 दिन)

﴿69﴾ **لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ** 564 बार पढ कर अल्लाह तआला के हुजूर डिफ्त में आसानी की दूआ कीजिये, कोशिश जारी रखने से **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** कुरआने करीम डिफ्त हो जायेगा.

﴿70﴾ **يَا حَيُّ يَا قَيُّوْمُ** अक बार कागज पर लिख कर ता'वीज बना कर आजू में बांध या गले में डाल लीजिये, **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** निस्थान (या'नी भूलने) की बीमारी से छुटकारा हासिल होगा.

﴿71﴾ **يَا عَلِيْمُ** 7 बार और हर बार **بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** के साथ सूरअे अलम नशरह 21 मरतबा पढ कर पानी पर दम कर के जिस बर्ये या बडे का हाकिमा कमजोर हो उस को पिलाईये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ** हाकिमा मजबूत हो जायेगा.

शोहर और बीवी में महब्बत

﴿72﴾ अगर शोहर से बीवी कम महब्बत करती हो तो शोहर रोजाना आ'द नमाजे असर आ वुजू मुंड में मिस्री की उली रफ कर **يَا وَدُودُ** 101

करमाने मुस्तकी علی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरुद शरीफ़ न पढे तो वोह लोगो में से कजूस तरीन शप्स है. (ज़िबतीया)

बार (अव्वल आबिर तीन बार दुरुद शरीफ़) पढ कर अपनी बीवी का तसव्वुर बांध कर उस के सीने पर दम कर दे. अगर शोहर महब्बत कम करता हो तो बीवी येही अमल करे. **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** मियां बीवी अेक दूसरे से महब्बत करने लगेंगे. (येह अमल सिर्फ़ मियां बीवी की महब्बत के लिये है और युपके से करना है न मियां बीवी अेक दूसरे को बताअें न किसी और को पता यले, के गलत फ़हमी के सबब नुकसान हो सकता है)

बस्ये की ठेहनी कमजोरी का इहानी छलाज

﴿73﴾ **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ** 786 बार (अव्वल आबिर तीन बार दुरुद शरीफ़) पढ (या पढवा) कर अेक बोतल पानी पर दम कर के रख लीजिये और वोह पानी रोजाना सुब्ह नहार मुंड और सोते वक्त बस्ये को पिलाते रडिये, ज़रतन दूसरा पानी मिलाते रडिये. **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** ठेहून रोशन हो जाअेगा. (मुदत : ता हुसूले मुराद)

अेपेन्डिक्स का इहानी छलाज

﴿74﴾ आ-यतुल कुर्सी 11 बार और **يَا عَظِیْمُ** 7 बार (अव्वल आबिर तीन बार दुरुद शरीफ़) पढ कर अेक चुटकी नमक पर दम कर के उस को पानी में डाल कर पी लीजिये. येह अमल दिन में तीन बार कीजिये. **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** अेपेन्डिक्स अत्म हो जाअेगा.

मिर्गी के दौरे का इहानी छलाज

﴿75﴾ **بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ اَلصَّ طَسَمَ كَهَيْعَصَ یِسْ** 75 बार (अव्वल आबिर तीन बार दुरुद शरीफ़) पढ कर अेक चुटकी नमक पर दम कर के उस को पानी में डाल कर पी लीजिये. येह अमल दिन में तीन बार कीजिये. **اِنَّ شَاءَ اللّٰهُ عَزَّوَجَلَّ** मिर्गी का दौरा अत्म हो जाअेगा.

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक आक आवूद हो जिस के पास मेरा जिंक हो और वोह मुज पर दुइदे पाक न पढे. (6)

नजर के इहानी घलाज

﴿76﴾ अेक मर्तबा सू-रतुल कौसर पढ कर बय्ये के सीधे गाल पर दम कीजिये. दूसरी मर्तबा सू-रतुल कौसर पढ कर उलटे गाल की तरफ और तीसरी मर्तबा पढ कर उस की पेशानी पर दम कर दीजिये **إِنْ شَاءَ اللهُ** नजर उतर जायेगी. (शुइअ में तीन बार दुइद शरीफ अेक बार अउजु और हर बार सू-रतुल कौसर से कबल पूरी **بِسْمِ اللهِ** पढनी है)

﴿77﴾ तीन मर्तबा **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** पढ कर सात मर्तबा येह दुआ : **بِسْمِ اللهِ، اللَّهُمَّ اَذْهَبْ حَزْهَآ وَبَرِّدْهَا وَوَصِّبْهَا** पढ कर जिस को नजर हो उस पर दम कीजिये, **إِنْ شَاءَ اللهُ** नजर उतर जायेगी.

﴿78﴾ **بِسْمِ اللهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ** सात बार, अेक मर्तबा आ-यतुल कुर्सी, तीन मर्तबा सू-रतुल इलक, तीन मर्तबा सू-रतुनास (इलक और नास के कबल हर बार पूरी **بِسْمِ اللهِ** पढनी है) अय्वल आबिर अेक बार दुइदे पाक पढ कर तीन अदद सुर्भ मिर्यो पर दम कीजिये. इर इन मिर्यो को मरीज के सर के गिर्द 21 बार घुमा कर यूल्हे में डाल दीजिये. **إِنْ شَاءَ اللهُ** नजर का असर दूर हो जायेगा.

बल प्रेशर के दो देसी घलाज

﴿1﴾ यार अदद कढी पत्ते अेक कप पानी में रात भर पडे रहने दीजिये, सुब्ह नहार मुंह उन यार में से दो पत्ते यबा कर भा लीजिये और उपर से वोही पानी पी लीजिये. (बकिय्या दो कढी पत्ते सालन वगैरा में इस्ति'माल कर लीजिये) **إِنْ شَاءَ اللهُ** सिर्फ अेक डफते में बल प्रेशर नॉर्मल हो जायेगा बल्के अेक ही दिन में इर्क मडसूस होगी. **إِلْحَادُ اللهِ** इस इलाज से बल प्रेशर के मरीज के येहरे पर त्नी रौनक आ जाती है.

قرمانے مستکفی علی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم: جس نے موت پر روئے جو مویا دے سو بار دڑدے پاک پدا اوس کے دے سو سال کے گوناگ مویا کے ائوے۔ (کرمال)

﴿2﴾ اڑبے اڑرت کرےلے کاٹ کر بیج سمےت پوشر کر لیجیے، ڈیر پیس کر پاوڑر بنا لیجیے۔ سوہل و شام آاڈی آاڈی یمچی پانے سے شوگر، ہلڈ پشار اور کولےسٹروئل نائرمبل اے آاےگا۔ (مڈتے اڈاآ : تا اوسولے شیک)

یہ رسالہ پڑ کر دوسرے کو دے دیجیے

شاڈی گمی کی تکریبات، اڈتیمآات، آا'راس اور جولو سے میلاڈ وگرا مے مک-ت-ہتول مڈنا کے شامے آڈا رسااڈل اور م-ڈنی ڈلوں پر مشتمبل پمڈلےت تکریم کر کے سواہ کمااڈے، گاڈکو اے ہ نیتے سواہ تولڈے مے ڈنے کے لیتے اپنی ڈکانوں پر ہی رسااڈل رہنے کا ما'مبل بنااڈے، اڈار ڈروشیوں یا ہشوں کے اڑریے اپنے مڈلے کے ڈروں مے اڑبے تولڈیک رسالے یا م-ڈنی ڈلوں کے پمڈلےت اڈر ماڈ پڈوںآا کر نےکی کی اڈ'وت کی ڈمے مآااڈے اور پوہ سواہ کمااڈے۔

گمے مڈنا، ہکیا، مڈرر اور ہ اڈساہ آنناتول ڈیرڈوس مے آاڈا کے پڈوس کا تالبل



21 ر-آہول مورآآہ 1436 س.ا.ا. 11-05-2015

آاڈو مآاآ

مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ	کتاب
دارالکتب العلمیہ بیروت	الترغیب والترہیب		قرآن مجید
دارالکتب العلمیہ بیروت	المجالسۃ	دارالکتب العلمیہ بیروت	بخاری
دارصادر بیروت	احیاء العلوم	دارابن حزم بیروت	مسلم
دارالکتب العلمیہ بیروت	عیون الحکایات	داراحیاء التراث العربی بیروت	ابوداؤد
دارالتوفیق دمشق	منہاج القاصدین	دارالفکر بیروت	ترمذی
دارالمعرفۃ بیروت	ردالمحر	دارالمعرفۃ بیروت	ابن ماجہ
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	ملفوظات اعلیٰ حضرت	دارالمعرفۃ بیروت	موطامام مالک
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	بہار شریعت	دارالفکر بیروت	مسند امام احمد
شعبہ القرآن پبلی کیشنز مرکز الادبیات لاہور	مرآة المناجیح	دارالکتب العلمیہ بیروت	معجم اوسط
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	چندی زیور	مکتبۃ العلوم والحکم مدینہ منورہ	مسند ابرا
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	152 رحمت بھری حکایات	دارالکتب العلمیہ بیروت	شعب الایمان
مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی	وسائل بخشش (مرم)	دارالمعرفۃ بیروت	المسرد رک
☆☆☆☆☆	☆☆☆☆☆	دارالکتب العلمیہ بیروت	القرودس ہما ثوراخطاب

इरमाने मुस्तफ़ा (عليه و آله و سلم) : मुज पर दुइद शरीफ़ पढो अल्लाह तुम पर रहमत भेजेगा. (अहमद)

इंडरिस

उन्वान	संख्या	उन्वान	संख्या
दुइद शरीफ़ की इजीलत	1	पेट की बीमारी में मरने की इजीलत	15
बीमार आबिद	1	बीमारियों में मरने वाले शहीदों की निशान देही	15
बीमारी बहुत बड़ी ने'मत है	2	बा'ज अमराज में मरने वाला शहीद है	15
बीमारी में मोमिन और मुनाफ़िक का इर्क	3	मरीज की इयादत का सवाब	16
जम्मी छोते ही हंस पड़ी (हिकायत)	4	बीमार को हुआ के लिये कछो	16
मुसीबत ह्युपाने की इजीलत	4	इयादत करते वक्त की अक सुन्नत	17
दाढ में दई के सबब में सो न सका ! (हिकायत)	5	इयादत में सात बार पढने की हुआ	17
बीमार के लिये तोड़फ़ा	5	इयादत के 7 म-दनी कूल	17
बीमारी के इजाईल पर 5 इरामीने मुस्तफ़ा	6	बीमारी और जूट	18
बिगैर बीमार हुअे वफ़ात	7	मा'भूली बीमारी को सप्त बीमारी कलने के	
अक रात के बुभार का सवाब	7	मु-तअद्लिक जूट की 6 मिसालें	18
बुभार मलशर की आग से बयाअेगा	7	हुभों के बा वुजूद नेकियों भरे जवाबात की मिसालें	20
बुभार को बुरा न कछो	8	मिजज पुर्सी के जवाब में जूट भोलने की 9 मिसालें	21
सरकार को दो मर्दों के बराबर बुभार आता था	8	अकल्ले कलने की अक नियत	22
हम ने कभी किसी का बुरा नहीं याहा !	9	मरीज को तसल्ली देने के लिये बोले जाने वाले	
मरीज और कलिमअे कुफ़	9	जूट की 13 मिसालें	22
सवाब के शौक में मांग कर बुभार लिया (हिकायत)	10	मरीज के जूट भोलने की 13 मिसालें	24
राहे फ़ुदा में सर दई पर सभ्र की इजीलत	11	बीमारियों के 78 इलानी इलाज	25
त-ल-बअे ईल्मे दीन और म-दनी काइलों के		बुभार के यार इलानी इलाज	25
मुसाफ़िरीन के लिये फ़ुश भबरी	11	अैसे बुभार का इलानी इलाज ज़े	
सर दई के शुक्राने में 400 रकअत नक़ल (हिकायत)	12	दवाओं से न ज़ता छे	25
बुभार और दई सर मुभारक अमराज हैं	12	नींद न आने के दो इलानी इलाज	26
जन्नती फ़ातून (हिकायत)	13	ज़रवरो के काटने और उन से डिफ़ाजत	26
दवा भी सुन्नत है और हुआ भी	14	के 3 इलानी इलाज	
मिर्गी का इलानी इलाज	14	जिन्नात के अ-सरात के 3 इलानी इलाज	27
नस यढ जाने की इजीलत	15	सोते में कोई यीज तंग करती छे या....	27

કરમાને મુસ્તફા ﷺ : મુઝ પર કસરત સે દુરૂદે પાક પઢો બેશક તુમ્હારા મુઝ પર દુરૂદે પાક પઢના તુમ્હારે ગુનાહોં કે લિયે મઝિફરત હૈ. (મુસ્નદ)

ઉન્વાન	પૃષ્ઠા	ઉન્વાન	પૃષ્ઠા
જાદૂ કે 2 રૂહાની ઈલાજ	27	મિર્ગી કે 3 રૂહાની ઈલાજ	35
ફાલિજ વ લક્વા કે 2 રૂહાની ઈલાજ	28	સર કે બાલ ઝડને કા રૂહાની ઈલાજ	35
હેપાટાઈટિસ કા રૂહાની ઈલાજ	29	ગન્જ દૂર કરને કા અમલ	36
યરકાન (JAUNDICE) કે 4 રૂહાની ઈલાજ	29	સૂજન કા રૂહાની ઈલાજ	36
દાંતોં કે દર્દ કે 2 રૂહાની ઈલાજ	29	મૂઝી અમરાઝ સે હિફાઝત કા રૂહાની નુસ્ખા	36
દાંત કે દર્દ કા ઈક્સીર અમલ	30	કમર કે દર્દ કા રૂહાની ઈલાજ	36
પિત્તે ઓર મસાને કી પથરી કા રૂહાની ઈલાજ	30	આધે ઓર પૂરે સર કે દર્દ કે 5 રૂહાની ઈલાજ	37
કચ્ચે પપીતે કે ઝરીએ ગુદે ઓર		દર્દે સર, ચક્કર આને ઓર દિમાગી	
પિત્તે કી પથરી કા ઈલાજ	30	કમઝોરી કા રૂહાની ઈલાજ	38
ગુદે ઓર પેશાબ કી બીમારિયોં કે 3 રૂહાની ઈલાજ	31	દીની ઈમ્તિહાન મેં કાચ્ચાબી કે લિયે	38
ગુદે કી બીમારિયોં કે લિયે તિબ્બી નુસ્ખા	32	આફતોં, બીમારિયોં, બે રોઝગારિયોં કે દો	
પેશાબ મેં ખૂન આને કા રૂહાની ઈલાજ	32	રૂહાની ઈલાજ	38
નાફ કા રૂહાની ઈલાજ	32	ખાવન્દ કો નેક નમાઝી બનાને કે લિયે	39
એહતિલામ કે દો રૂહાની ઈલાજ	32	કેન્સર કે 4 રૂહાની ઈલાજ	39
આંખોં કે અમરાઝ કે 3 રૂહાની ઈલાજ	33	રોઝાના પિસ્તે ખાઈયે ઓર ખુદ કો	
કાન કે દર્દ કા રૂહાની ઈલાજ	33	કેન્સર સે બચાઈયે	40
નઝલા ઝુકામ કા રૂહાની ઈલાજ	34	કુલ્લતે હાફિઝા કે લિયે ચાર અવરાદ	41
દિલ કી ધડકન બઢ જાને કા રૂહાની ઈલાજ	34	શોહર ઓર બીવી મેં મહબ્બત	41
દિલ કે સૂરાખ કા રૂહાની ઈલાજ	34	બચ્ચે કી ઝેહની કમઝોરી કા રૂહાની ઈલાજ	42
ન-ઝરે બદ કે 3 રૂહાની ઈલાજ	34	એપેન્ડિક્સ કા રૂહાની ઈલાજ	42
નઝર ઓર દર્દ કા રૂહાની ઈલાજ	34	મિર્ગી કે દોરે કા રૂહાની ઈલાજ	42
નઝર ઓર હર કિસ્મ કે શર સે	35	નઝર કે રૂહાની ઈલાજ	43
બચ્ચોં કી હીફાઝત કે લિયે		બ્લડ પ્રેશર કે દો દેસી ઈલાજ	43

યેહ રિસાલા પઢ લેને કે બા'દ સવાબ
કી નિયત સે કિસી કો દે દીજિયે

أَلْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

कुरआन भुला देने का अजान

यकीनन डिफ्ते कुरआने करीम कारे सवाबे अजीम है मगर याद रहे ! डिफ्ठ करना आसान मगर उम्र त्तर ईस को याद रबना दुश्वार है. दुर्फ्ठा व हाकिमत को याहिये के रोजाना कम अज कम अक पारह लाजिमन तिलावत कर लिया करें. जो दुर्फ्ठा २-मजानुल मुबारक की आमद से थोडा अर्सा कब्ल इकत मुसल्ला सुनाने के लिये मन्जिल पक्की करते हैं और ईस के ठलावा **مَعَاذَ اللَّهِ عَزَّوَجَلَّ** सारा साल गइलत के सबब कई आयात तुलाओ रहते हैं, वोड बार बार पढ़ें और भौंके भुदा **عَزَّوَجَلَّ** से लरजें. **इरमाने मुस्तफ़ा** : **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** :

“जो शप्स कुरआन पढे इर उसे तुला दे तो कियामत के दिन अद्लाह तआला से कोठी हो कर मिले.” (अबुदाउद हदिथ ११४६) सदरुशशरीअह, अदरुतरीकह उजरते अद्लामा मौलाना मुफ्ती मुहम्मद अमजद अली आ'जमी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرَى** इरमाते हैं : कुरआन पढ कर तुला देना गुनाह है. जो कुरआनी आयात याद करने के बा'द तुला देगा बरोजे कियामत अन्धा उठया जाओगा. (अहारे शरीअत, जि. 1, स. 553) **आ'ला** उजरत ठमाम अहमद रजा पान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكَبِيرَى** इरमाते हैं : उस से जियादा नादान कौन है जिसे भुदा औसी डिम्मत बप्शे और वोड उसे अपने हाथ से भो दे अगर कद्र ईस (डिफ्ते कुरआने पाक) की जानता और जो सवाब और द-रजात ईस पर मौजिद हैं (या'नी जिन का वा'दा किया गया है) उन से वाकिफ़ होता तो ईसे जानो हिल से जियादा अजीज (प्यारा) रभता. मजीद इरमाते हैं : जहां तक हो सके ईस के पढाने और डिफ्ठ कराने और भुद याद रबने में कोशिश करे ताके वोड सवाब जो ईस पर मौजिद (या'नी वा'दा किये गये) हैं हासिल हों और बरोजे कियामत अन्धा कोठी उठने से नजात पाओ.

(इतावा २-जविय्या, जि. 23, स. 645, 647)

﴿ बुद्धों के तंकिरे का अहमद ﴾

ઈમમ અહમદ બિન હમ્બલ عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم
બીમારી કી વજહ સે ટેક લગાએ હુએ થે, આપ કી
ખિદમત મેં હઝરતે ઈબ્રાહીમ બિન તહમાન
عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن કા ઝિકે ખૈર હુવા, તો ફૌરન સીધે
બૈઠ ગએ ઔર ફરમાને લગે સાલિહીન કે તંકિરે
કે વક્ત ટેક લગા કર બૈઠના મુનાસિબ નહીં

(تاريخ بغداد للخطيب البغدادي ج ١ ص ١٠٨)

મૂરત : વલિયા ભાઈ મસ્જિદ, ખ્વાજા દના દરગાહ કે પાસ મો. 8488866394

મોડસા : ફૈઝાને મદીના, બાગે હિદયત સોસાયટી, કોલેજ રોડ મો. 9725824820

ભરૂચ : ફૈઝાને મદીના, મેમણ કોલોની, બુન્યાદ નગર, ડુંગરી શેરપૂર રોડ મો. 9327522145

માંડવી : ફૈઝાને મદીના, તયબા મસ્જિદ કે પાસ બન્દર રોડ મો. 7383774763

જામનગર : પાંચ હાટડી મો. 9327977293



મક-ત-બતુલ મદીના®

દા'વતે ઈસ્લામી

ફૈઝાને મદીના, શ્રી કોનિયા બગીચે કે પાસ, મિરઝાપૂર, અહમદઆબાદ-1. ગુજરાત, ઇન્ડિયા
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net